Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ

(सूरः अन्फ़ाल : 206)

(तर्जुमा) : अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह और(उसके) रसूल से ख़यानत न करो अन्यथा तुम उसके नतीजा में ख़ुद अपनी अमानतों से ख़यानत करने लगोगे।
जबकि तुम (उस ख़यानत को) जानते होगे।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 8
अंक-7

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

24 रजब 1444 हिज्री कमरी, 16 तबलीग़ 1402 हिज्री शम्सी, 16 फ़रवरी 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

कारणवश नफ़ली रोज़ा खोल लेना

(1968) वहब बिन अब्दुल्लाह सिवाइ से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हो को आपस में भाई भाई बनाया। हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हो से मिलने गए तो उन्होंने हज़रत उम्मे दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हा को देखा कि उन्होंने मैले कुचैले कपड़े पहने हुए हैं। उन्होंने उन से पूछा : तुम्हारा यह क्या हाल है? वह कहने लगीं : तुम्हारे भाई अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हो को दुनिया में कोई हाजत नहीं। इतने में हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हो आए तो उन्होंने हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए खाना तैयार किया और उनसे कहा आप रज़ियल्लाहु अन्हो खाएं (और) कहा : मैं तो रोज़ादार हूँ। हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा : मैं उस वक़्त तक हरगिज़ नहीं खाऊंगा जब तक आप रज़ियल्लाहु अन्हो न खाएं।(वहब ने) कहा हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हो ने खाना खाया और जब रात हुई तो हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने लगे। (हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने) कहा सोएँ। तो वह सो गए। फिर नमाज़ के लिए उठने लगे तो उन्होंने कहा अभी सोएँ। जब रात का आख़िरी हिस्सा हुआ तो हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा : अब उठें और दोनों ने नमाज़ पढ़ी और हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन से कहा : तेरे रब का भी तुझ पर हक़ है और तेरे नफ़्स का भी और तेरीय बीवी का भी तुझ पर हक़ है। इस लिए हर हक़ वाले को उसका हक़ दे। हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए और सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इस बात का वर्णन तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इन से फ़रमाया : सलमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने सच्च कहा है

(सही बुख़ारी,भाग 3 किताब अल् सौम, मुद्रित 2008 कादियान)

★ ★ ★

मूर्ख है वह इन्सान जो अपनी अक़ल-ओ-दानिश या अपने धन दौलत पर घमंड करता है
क्योंकि ये सब कुछ अल्लाह तआला ही का अतीया है, वह कहाँ से लाया

दुआ के लिए ज़रूरी है कि इन्सान अपने ज़ुअफ़ और कमज़ोरी का पूरा ख़्याल और तसव्वुर करे, जूँ-जूँ वह अपनी कमज़ोरी पर ग़ौर करेगा उसी क़दर अपने आपको अल्लाह तआला की मदद का मुहताज पाएगा और इस तरह पर दुआ के लिए उसके अंदर एक जोश पैदा होगा

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

यह सच्ची बात है خُلِقَ الۡاِنۡسَانُ ضَعِیۡفًا (अल् निसा : 29) इन्सान कमज़ोर मख़लूक़ है। वह अल्लाह तआला के फ़ज़ल और करम के बिना कुछ भी नहीं कर सकता। उस का वजूद और उस की परवरिश और जीवनी के सामान सब के सब अल्लाह तआला के फ़ज़ल पर आधारित हैं। अहमक़ है वह इन्सान जो अपनी अक़ल-ओ-दानिश या अपने धन दौलत पर घमंड करता है, क्योंकि ये सब कुछ अल्लाह तआला ही का अतीया है, वह कहाँ से लाया? और दुआ के लिए यह ज़रूरी बात है कि इन्सान अपने ज़ुअफ़ और कमज़ोरी का पूरा ख़्याल और तसव्वुर करे। जूँ-जूँ वह अपनी कमज़ोरी पर ग़ौर करेगा उसी क़दर अपने आपको अल्लाह तआला की मदद का मुहताज पाएगा और इस तरह पर दुआ के लिए उस के अंदर एक जोश पैदा होगा। जैसे इन्सान जब मुसीबत में मुबतला होता है और दुख या तंगी महसूस करता है तो बड़े ज़ोर के साथ पुकारता और चिल्लाता है और दूसरे से मदद मांगता है। इसी तरह अगर वह अपनी कमज़ोरियों और लग़ज़िशों पर ग़ौर करेगा और अपने आपको हर-आन अल्लाह तआला की मदद का मुहताज पाएगा तो उस की रूह पूरे जोश और दर्द से बेक़रार हो कर आस्ताना-ए-उलूहियत पर गिरती और चिल्लाती है और या रब या रब یَارَبِّ یَارَبِّ कह कर पुकारती है। ग़ौर से क़ुरआन-ए-करीम को देखो तो तुम्हें मालूम होगा कि पहली ही सूरत में अल्लाह तआला ने दुआ की तालीम दी है। اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ (अल् फ़ातिहा : 6,7)
दुआ तब ही जामा हो सकती है कि वो समस्त मुनाफ़े और मुफ़ाद को अपने अंदर रखती हो और समस्त नुक़्सानों और हानियों से बचाती हो। अतः इस दुआ में समस्त बेहतरीन मुनाफ़ा जो हो सकते हैं और मुम्किन हैं वह इस दुआ में मतलूब हैं और बड़ी से बड़ी नुक़्सान रसां चीज़ जो इन्सान को हलाक कर देती है इस से बचने की दुआ है।
मैं बार-बार कह चुका हूँ कि मुनअम अलैह चार प्रकार के लोग हैं। प्रथम नबी। द्वितीय सिद्दीक़। तृतीय शहीद। चतुर्थ सालहीन। अत अतः इस दुआ में गोया इन चारों गिरोहों के कमालात की मांग है।

(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 372 मुद्रित 2018 कादियान)

★ ★ ★

क़ुरआन-ए-मजीद के सिवा कौन सी तालीम है जो दुनिया के इख़तेलाफ़ात मिटा सकती है
अगर दुनिया को मालूम हो जाए कि यह कलाम ख़ुदा तआला की तरफ़ से है तब तो वे अपने ख़्यालात को छोड़ देगा।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत नहल आयत : 65 وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَیۡکَ الۡکِتٰبَ اِلَّا لِتُبَیِّنَ لَهُمُ الَّذِی اخۡتَلَفُوۡا فِیۡهِ ۙ وَهُدًی وَّرَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ یُّؤۡمِنُوۡنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

कलाम-ए-इलाही के नुज़ूल की एक और भी ज़रूरत है कि दुनिया में लोगों में अख़लाक़ी और मज़हबी उमूर के बारे में शदीद इख़तेलाफ़ पाया जाता है। यह इख़तेलाफ़ बग़ैर इसके किस तरह दूर हो सकता है कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से एक यक़ीनी इलम हासिल हो जाएगा। अतः इस इलम के देने के लिए यह किताब नाज़िल हुई है। इस के सिवा कौन सी तालीम दुनिया के इख़तेलाफ़ मिटा

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला ने माली क़ुर्बानी को इस हद तक एहमियत दी है कि हक़ीक़ी नेकी जिससे ख़ुदा तआला राज़ी होता है
इस शर्त के साथ कि वह ख़ुदा तआला की रज़ा हासिल करने के लिए की जाए उस वक़्त नेकी शुमार होगी जब अपनी महबूब चीज़ ख़ुदा तआला की रज़ा की ख़ातिर लोगों की हमदर्दी में की जाए

तहरीक वक़्फ़-ए-जदीद के पैंसठवें वर्ष के दौरान अहमदिया जमाअत की तरफ़ से एक करोड़ बाईस लाख पंद्रह हज़ार पाऊंडज़ की बेमिसाल कुर्बानी

अल्लाह तआला की राह में माल वह क़बूल होता है जो किसी का महबूब माल हो

यह जो कारोबार है बिट कॉइन (Bitcoin) वग़ैरा का मेरे नज़दीक तो यह एक किस्म का जुआ भी है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद जारी निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त में भी अल्लाह तआला हर दौर में क़ुर्बानी करने वाले अता फ़रमाता चला जा रहा है
जो क़ुर्बानियां करके अपनी तर्जीहात को पसेपुश्त डाल कर बढ़ बढ़कर क़ुर्बानियां करने की कोशिश कर रहे हैं, उनमें पुराने अहमदी भी शामिल हैं और नौ मुबाईन भी शामिल हैं

अतः अल्लाह तआला के रास्ते में की गई क़ुर्बानी न सिर्फ इस दुनिया में फ़ायदा पहुंचाती है बल्कि आइन्दा ज़िंदगी में मरने के बाद भी लाभ देगी

सोच की बात है, दुनियादार कुछ और सोचता है लेकिन एक दीनदार इन्सान यही सोचता है कि अल्लाह का फ़ज़ल उस की राह में ख़र्च करने की वजह से हो रहे हैं

वक़्फ़-ए-जदीद के छयासठवें वर्ष के आरंभ का ऐलान, दुनिया-भर में बसने वाले अहमदियों की क़ुर्बानी के वाक़ियात का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 06 जनवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ

(आले इमरान : 93)

इस आयत का अनुवाद है कि तुम हरगिज़ नेकी को पा नहीं सकोगे यहां तक कि तुम उन चीज़ों में से ख़र्च करो जिनसे तुम मुहब्बत करते हो और तुम जो कुछ भी ख़र्च करते हो तो निसंदेह अल्लाह उसको ख़ूब जानता है। इस आयत की वज़ाहत फ़रमाते हुए एक जगह हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "तुम हक़ीक़ी नेकी को जो निजात तक पहुंचाती है हरगिज़ पा नहीं सकते बजुज़ इस के कि तुम ख़ुदा तआला की राह में वह माल और वे चीज़ें ख़र्च करो जो तुम्हारी प्यारी हैं।"

(फ़तह इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 38)

फिर आप फ़रमाया कि 'तुम हक़ीक़ी नेकी को हरगिज़ नहीं पा सकते जब तक कि बनीनौ की हमदर्दी में वह माल ख़र्च न करो जो तुम्हारा प्यारा माल है।" (इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 10 पृष्ठ 358)

अतः अल्लाह तआला ने माली क़ुर्बानी को इस हद तक एहमीयत दी है कि हक़ीक़ी नेकी जिससे ख़ुदा तआला राज़ी होता है इस शर्त के साथ कि वह ख़ुदा तआला की रज़ा हासिल करने के लिए की जाए उस वक़्त नेकी शुमार होगी जब अपनी महबूब चीज़ ख़ुदा तआला की रज़ा की ख़ातिर हमदरद ई ख़लक़ में ख़र्च की जाए और फिर ये चीज़ निजात का ज़रीया बनती है। एक जगह आप ने फ़रमाया कि यह तो कोई नेकी नहीं कि किसी की गाय बीमार हो जाए और बचने की कोई उम्मीद न हो तो कह दे कि उसे ख़ुदा की राह में दे देते हैं या कोई फ़क़ीर आए और उसे घर की बासी रोटियाँ दे दी जाएं, पुरानी रोटियाँ जिनको घर में कोई खाता नहीं। तो ये चीज़ें तो वैसे ही उसके काम की नहीं रहीं।

अल्लाह तआला की राह में माल वह क़बूल होता है जो किसी का महबूब माल हो और फिर वह क़ुर्बानी कर के अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए दे।

यही हक़ीक़ी नेकी है। यही बात हमदरद ई ख़लक़ का सही पता देती है। इस से पता चलता है कि हमारे दिल में दूसरों के लिए कितना दर्द है। हमारे अंदर दीन की ख़िदमत के लिए क्या शौक़ है और इस बारे में हमारे जज़बात क्या हैं। (उद्धृत मल् फूज़ात, भाग 8 पृष्ठ 19 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं "दुनिया में इन्सान माल से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करता है। इसी वास्ते इलम ताबीरूर रोया में लिखा है कि अगर कोई शख़्स देखे कि उस ने जिगर निकाल कर किसी को दे दिया है तो इस से मुराद माल है। यही वजह है कि हक़ीक़ी संयम और ईमान के हुसूल के लिए फ़रमाया। لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ(ऑल-इमरान:नू 93) हक़ीक़ी नेकी को हरगिज़ नहीं पाओगे जब तक तुम अज़ीज़ तरीन चीज़ न ख़र्च करोगे क्योंकि मख़लूक़-ए-इलाही के साथ हमदर्दी और सुलूक का एक बड़ा हिस्सा माल के ख़र्च करने की ज़रूरत बतलाता है और आबनाए जिंस और मख़लूक़-ए-ख़ुदा की हमदर्दी एक ऐसी वस्तु है जो ईमान का दूसरा भाग है। जिसके सिवा ईमान-ए--कामिल और रासिख़ नहीं होता। जब तक इन्सान ईसार न करे दूसरे को नफ़ा क्योंकर पहुंचा सकता है। दूसरे को लाभ देने और हमदर्दी के लिए ईसार ज़रूरी चीज़ है और इस आयत में لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ क़ुर्बानी की तालीम और हिदायत फ़रमाई है।

अतः माल का अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करना भी इन्सान की सआदत और तक़्वा शआरी का मयार और महक है। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़िंदगी में अल्लाह के मर्ग़ मे वक़्फ़ का मयार और महक वह थी जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक ज़रूरत वर्णन की और वह घर का समस्त समान लेकर हाज़िर हो गए।" (मल् फूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 95-96 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः क़ुर्बानी के और पसंदीदा माल के पेश करने के ये वह मयार हैं जिनकी आला तरीन मिसाल जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हज़रत अबू-बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ायम फ़रमाई और फिर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी बिसात के मुताबिक़ हिफ़्ज़-ए-मुरातिब के लिहाज़ से क़ुर्बानियों के ये मयार क़ायम किए।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में हम देखते हैं तो आप मिशन को पूरा करने के लिए जो इशाअत-ए-लिटरेचर है और इशाअत-ए-इस्लाम के लिए है, आला तरीन मिसाल हज़रत हकीम मौलाना नूरुद्दीन ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ायम फ़रमाई। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-

स्सलाम को आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा जिसका वर्णन ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "मैं आपकी राह में क़ुर्बान हूँ। मेरा जो कुछ है मेरा नहीं आप का है। हज़रत पीर-ओ-मुर्शिद में कमाल रास्ती से अर्ज़ करता हूँ कि मेरा सारा माल-ओ-दौलत अगर दीनी इशाअत में ख़र्च हो जाए तो मैं मुराद को गया।" फिर लिखा कि" .. मुझे आपसे निस्बत-ए-फ़ारूक़ी है और सब कुछ इस राह में फ़िदा करने के लिए तैयार हूँ। दुआ फरमावें कि मेरी मौत सिद्दीक़ों की मौत हो।" (फ़तह इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 36)

इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बहुत से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो थे जिन्हों ने अपनी अपनी इस्तिदादों के मुताबिक़ क़ुर्बानियां दींऔर ऐसी ऐसी क़ुर्बानियां दीं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मुझे उनकी क़ुर्बानियां देख के हैरत होती है। ये क़ुर्बानियां क्यों दें? इसलिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन जो इशाअत-ए-इस्लाम का मिशन है इस में आपके मददगार बनें। इसलिए कि मख़लूक़ से हमदर्दी का दर्द रखते हुए उन्हें भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ की जमाअत में शामिल करने के लिएक़ुर्बानी पेश करें। तकमील-ए-हिदायत के लिए अपना किरदार अदा करें और ये क़ुर्बानियों की जाग अफ़राद जमात को ऐसी लगी कि हज़रत मसीह मौऊद अलै-हिस्सलाम के बाद जारी निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त में भी अल्लाह तआला हर दौर में क़ुर्बानी करने वाले अता फ़रमाता चला जा रहा है जो क़ुर्बानियां कर के अपनी तर्जी-हात को पसेपुश्त डाल कर बढ़ बढ़कर क़ुर्बानियां करने की कोशिश कर रहे हैं। उनमें पुराने अहमदी भी शामिल हैं और नौ मुबाईन भी शामिल हैं जिनकी क़ुर्बानियों की मिसालें भी में पेश करूँगा।

बहरहाल आज का जो ख़ुतबा है, जनवरी का जो पहला ख़ुतबा है उमूमन वक़्फ़-
-ए-जदीद के नए साल के ऐलान के बारे में होता है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने 1957 ई. में इस तहरीक को शुरू फ़रमाया जो देहातों में तर्बीयत-ओ-तब्लीग़ के लिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने शुरू फ़रमाई जो पहले सिर्फ पाकिस्तान तक ही महिदूद थी। फिर ख़िलाफ़त-ए-राबिया में इस को वुसअत देकर समस्त देशों तक फैला दिया गया और जो तरक़्क़ी याफताह देशों हैं उनकी इस चंदे की रक़म अफ़्रीक़ा के देशों में तर्बीयत-ओ-तब्लीग़ पर ख़र्च करने का इरशाद हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह राबे र. ने फ़रमाया था और उमूमन यही सिलसिला अब तक चल रहा है। इस चंदे की आमद को अफ़्रीक़ा में और दूसरे ग़रीब देशों में ख़र्च किया जाता है। अहबाब-ए-जमात अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बढ़ चढ़ कर इस में हिस्सा लेते हैं लेकिन यह नहीं कि अफ़्रीक़ा के और दूसरे तरक़्क़ी याफताह या तरक़्क़ी पज़ीर देशों के अहमदी इस में हिस्सा नहीं ले रहे। इन लोगों की क़ुर्बानियां भी उनकी आमद और हालात के मुताबिक़ काबिल-ए-तारीफ़ हैं लेकिन ज़ायद अख़राजात बहरहाल अमीर मुल्कों के चंदों से पूरे किए जाते हैं, तरक़्क़ी याफताह मुल्कों के चंदों से पूरे किए जाते हैं। हर जगह ये क़ुर्बानियां करने वाले इस बात का कामिल इदराक रखते हैं जो बात एक हदीस-ए-क़ुदसी में आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वर्णन फ़रमाई कि अल्लाह तआला फ़रमाता है हे आदम के बेटे तू अपना ख़ज़ाना मेरे पास जमा कर के मुतमइन हो जा। न आग लगने का ख़तरा, न पानी में डूबने का अंदेशा और न किसी चोर की चोरी का डर। मेरे पास रखा गया ख़ज़ाना मैं पूरा तुझे दूँगा उस दिन जब तू इस का सबसे ज़्यादा मुहताज होगा।

(कंज़ुल अम्माल, भाग 6 पृष्ठ 352 हदीस नंबर 16021 मुद्रित مؤسسة الرسالة बेरूत 1985 ई.)

अतः अल्लाह तआला के रास्ते में की गई क़ुर्बानी न सिर्फ इस दुनिया में फ़ायदा पहुंचाती है बल्कि आइन्दा ज़िंदगी में मरने के बाद भी फ़ायदा देगी।

अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है कि وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ (अल् बकरः : 273) और जो भी तुम माल में से ख़र्च करो वह तुम्हें भरपूर वापस कर दिया जाएगा और हरगिज़ तुमसे कोई ज़्यादती नहीं की जाएगी। अतः अल्लाह तआला जब वादा करता है तो पूरा भी करता है। इसके नमूने इस दुनिया में भी हमें दिखा देता है ताकि इस यक़ीन पर क़ायम हो जाओ कि अगले जहान में भी अल्लाह तआला के इनामों के वारिस बनोगे। दुनियावी इदारों की तरह नहीं है कि कारोबारों में रक़म लगाओ और नुक़्सान हो जाए या कुछ अरसा फ़ायदा हो और फिर सिर्फ़ दुनियावी फ़ायदा हो, आगे की कोई ज़मानत नहीं है बल्कि दुनिया के तो बाअज़ ऐसे कारोबार हैं जो कुछ अरसा तक तो फ़ायदा देते हैं फिर उनको चलाने वाले ही सब कुछ खा जाते हैं और वे ग़रीब लोग जिन्हों ने इनवैस्टमैंट की होती है उनका पैसा डूब जाता है जैसे आजकल बड़ा शोर मचा हुआ है कि कई बिलीयन डालर लोगों के डूब गए जिन्हों ने (Bitcoin) या (Cryptocurrency) मे अपनी रकमें लगाई हुई थीं। उनके चलाने वाले खा गए। ख़त्म हो गया सब कुछ। बहरहाल ये जो कारोबार है बिट कॉयन वग़ैरा का मेरे नज़दीक तो यह एक किस्म का जुआ भी है।

लेकिन बहरहाल अल्लाह तआला किस तरह अपनी ख़ातिर क़ुर्बानी करने वालों को नवाज़ता है इस के अजीब नज़्ज़ारे हैं। जैसा कि मैंने कहा था कि मैं कुछ मिसालें पेश करूँगा। ऐसी मिसालें हैं कि जहां क़ुर्बानी करने वाले दुनियावीफ़ायदा उठा रहे हैं वहां उनके ईमान में भी इज़ाफ़ा होता है। उदाहरणतः लाइबेरिया की एक मिसाल है। वहां बूमी काओनटी है। मुअल्लिम कहते हैं कि वक़्फ़-ए-जदीद की वसूली के लिए नौ मुबाईन की एक जमात फ़ोमबा (Fomba) है। मैं वहां गया। मुक़ामी इमाम से मुलाक़ात के बाद एक इजतेमाई प्रोग्राम मुनाक़िद किया जिस में गांव की अक्स-रियत शामिल हुई। अहबाब को वक़्फ़-ए-जदीद की एहमियत और बरकात के हवाले से बताया गया। प्रोग्राम के बाद अहबाब से इन्फ़रादी तौर पर उन के घरों में जा कर भी वसूली की। एक ख़ादिम इस दौरान में घर गया। उसके घर पर कुछ नहीं था। उसकी वालदा ने माज़रत की कि अभी चंदे के पैसे नहीं हैं बाद में किसी वक़्त दे देंगे। कहते हैं हम वापस आ गए। थोड़ी देर के बाद वह ख़ादिम दौड़ता हुआ आयाऔ र कहा ये दो सौ पच्चास लाइबेरीन डालर हैं जो मुझे मेरे पिता ने स्कूल की फ़ीस के लिए दिए थे ये मैं चंदे में दे देता हूँ ता कि हमारा घर इस तहरीक से महरूम न हो जाए। कहते हैं कुछ दिनों के बाद वही ख़ादिम मेरे सैंटर में आया और बताया कि आपके जाने के दो दिन बाद ही मुझे पैग़ाम मिला कि मेरे किसी रिश्तेदार ने मेरी स्कूल की ज़रूरियात के लिए पच्चीस सौ लाइबेरीन डालर की रक़म भेजी है। इसलिए मैंने इस से अपनी फ़ीस भी अदा कर दी और दूसरी ज़रूरत की इश्याय भी खरीदीं। कहने लगा कि अल्लाह तआला ने तो मुझे मेरी क़ुर्बानी से दस गुना बढ़के दिया है।

तो इस तरह अल्लाह तआला दिलों में ईमान और यक़ीन पैदा करता है और अल्लाह तआला जो यहां नवाज़ता है तो अगले जहान के जो वादे हैं वे भी इन शा अल्लाह तआला पूरा करेगा जहां यह हिसाब जमा हो रहा है।

फिर गिनी कनाकरी की एक मिसाल है। वहां के एक रीजन की जमाअत है मनसा या (Mansaya) वहां के मिशनरी कहते हैं कि अशर-ए-वक़्फ़-ए-जदीद मना रहे थे। अहबाब जमाअत को मस्जिद में और इन्फ़रादी तौर पर चंदा वक़्फ़-ए-जदीद की एहमियत और बरकत बताते हुए इस बाबरकत तहरीक में शामिल होने की तरफ़ तवज्जा दिला रहे थे कि गांव के, मस्जिद के इमाम अबू बकर कुमारा साहिब जो हाल ही में अहमदी हुए हैं उन्होंने कहा कि पहले मैं चंदा अदा करूँगा क्योंकि हमें दूसरों के लिए नमूना बनना चाहिए

अब यह हालत भी है। यह नहीं है कि ख़ुद तो तहरीक में हिस्सा न लें और दूसरों को कहें बल्कि ख़ुद भी कहते हैं कि पहले हमें तहरीक करनी चाहिए। लिहाज़ा उन्होंने अपनी जेब में मौजूद दस हज़ार फ्राँक गिनी चंदे में अदा कर दिया और बाद में ये मिलने आए और उन्होंने बताया कि वह चंदा तो मैं ने दे दिया था लेकिन कुछ देर के बाद ही मेरे एक दोस्त ने मुझे पंद्रह लाख फ्राँक भेंट में भिजवाए और कहते हैं जो मैं समझता हूँ मेरी इस क़ुर्बानी के नतीजे में ही अल्लाह तआला ने यह मुझे अता फ़रमाया। कहते हैं अब मैं पहले से और बढ़कर और बाक़ायदगी से चंदों में हिस्सा लिया करूँगा। यह है सुलूक अल्लाह तआला का नौ मुबाईन के साथ कि मेरे रस्ते में ख़र्च करोगे तो यहां भी नवाज़ोंगा और आगे के वादे तो फिर इन शा अल्लाह पूरे होंगे।

फिर कैमरोन के मुअल्लिम लिखते हैं कि एक नौजवान मेरे साथ तहरीक जदीद के चंदे के लिए देहातों में जाते रहे। बेरोज़गार थे इसलिए ख़ुद तहरीक जदीद के चंदे में सिर्फ उन्होंने एक हज़ार सेफ़ा चंदा दिया और कहा कि दुआ करें मुझे मुलाज़मत मिल जाए तो मैं और दूँगा। मुअल्लिम ने कहा ठीक है मैं भी दुआ करता हूँ। तुम भी अपनी मुलाज़मत के लिए दुआ करो। अल्लाह तआला ने कुछ अरसा बाद उसकी दुआ सुनी। एक माह के बाद यू ऐन ओ की एक तंज़ीम में बतौर ड्राईवर उनको काम मिल गया इस तरह उस ने वक़्फ़-ए-जदीद के वादे में दस हज़ार सीफ़ा चंदा अदा कर दिया कि जब मैं ने मुश्किल हालात में दिया था तो उसके बदले में यह अल्लाह तआला ने मेरी आमद में इज़ाफ़ा किया है।

तनज़ानिया के अमीर साहिब लिखते हैं। एक जमाअत की एक ख़ातून ने बताया कि एक दिन वह घर की ख़रीदारी के लिए बाज़ार जा रही थीं। रस्ते में मुअल्लिम से मुलाक़ात हो गई। उसने चंदा वक़्फ़-ए-जदीद के बारे में बताया और उसकी अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाई तो कहती हैं मैंने उसे कहा कि मेरे पास इस वक़्त दो हज़ार शलंग है। बाज़ार से मैं सौदा लेने जा रही हूँ तो एक हज़ार शलंग चंदा अदा कर दिया और बाक़ी एक हज़ार का अपना सामान ख़रीद लूँगी। कहती हैं वहां मुझे एक ख़ातून

ने पीछे से आवाज़ दी जिसने कुछ अरसा पहले मुझसे पाँच हज़ार शलंग लिए हुए थे और लंबा अरसा गुज़र गया था जिसकी वापसी की मुझे अब उम्मीद भी नहीं थी। इस ख़ातून ने आवाज़ देकर वह पाँच हज़ार शलंग मुझे दिए कि यह तुम्हारा क़र्ज़ था जो मैंने वापस करना था। फिर वह दुबारा मुअल्लिम के पास वापस आएं और कहा कि यह तो चंदे की बरकत से मुझे अल्लाह तआला ने अता फ़र्मा दिया इसलिए मज़ीद एक हज़ार शलंग चंदा अदा दिया।

लाइबेरिया के मुअल्लिम वर्णन करते हैं कि वहां एक गांटा Ganta) जमाअत है। वहां एक मैंबर आईशा साहिबा हैं। वह उनके घर गए। वक़्फ़-ए-जदीद की तहरीक में शमूलियत की तरफ़ तवज्जा दिलाई। उन्होंने कहा इस वक़्त तो मेरे पास कुछ नहीं है लेकिन आप ज़रा ठहरें में कुछ इंतेज़ाम करती हूँ ताकि मेरे घर से ख़ाली हाथ न जाएं। यह भी फ़िक्र है कि कोई ख़ाली हाथ न जाए। इसलिए उन्होंने जल्दी से किसी से उधार लेकर 100 लाइबेरीन डालर चंदा अदा कर दिया। मुअल्लिम कहते हैं कि अभी मैं उनके घर में ही था कि इस ख़ातून के फ़ोन पर मैसिज आया कि किसी ने उनके एकाऊंट में ऑनलाइन कुछ पैसे ट्रांसफ़र किए हैं और ख़ातून कहती हैं कि यह तो अभी जो मैं ने सौ लाइबेरीन डालर चंदा दिया था उस के बदले मे अल्लाह तआला ने फ़ौरी तौर पर मुझे दिया।

फिर गिनी कनाकरी के मुरब्बी साहब लिखते हैं कि जमाअत के एक मैंबर सईदोबा (Saeedouba) साहिब हैं। बे रोज़गार थे और माइनिंग कंपनीज़ में उन्होंने दरख़ास्तें दी हुई थीं लेकिन कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही थी। अशर-ए-वक़्फ़-ए-जदीद के दौरान उन्हें जब चंदे की अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाई गई तो उन्होंने कहा मैं तो बेरोज़गार हूँ कुछ ज़्यादा तो नहीं दे सकता। बहरहाल जेब में हाथ डाला उन्होंने और पाँच हज़ार फ्राँक निकाल कर चंदा अदा कर दिया कि इस वक़्त कुल रक़म यही मेरे पास है। कहते हैं चंदे की अदायगी के पाँच दिन बाद उन्हें एक और माइनिंग कंपनी की तरफ़ से मुलाज़मत की ऑफ़र हुई जहां उन्होंने दरख़ास्त भी नहीं दी हुई थी और अल्लाह के फ़ज़ल से पाँच लाख फ्राँक माहाना तनख़्वाह पर उनको मुलाज़मत मिल गई। यह कहते हैं कि अल्लाह तआला की राह में जो मैं ने मामूली क़ुर्बानी दी थी अल्लाह तआला ने अपने वादे के मुताबिक़ कई गुना बढ़ा के मुझे यह अता फ़र्मा रहा है।

फिर नाईजेरिया के मुरब्बी हैं उन्होंने भी लिखा। कहते हैं कानू स्टेट के एक अहमदी दोस्त नासिर साहिब हैं। उन्होंने कहा कि तीन साल से बग़ैर जॉब (job) के परेशान था। मुझे ख़्याल आया कि क्यों न मैं अपनी ताकत के मुताबिक़ दुबारा चंदा देना शुरू कर दूं। जॉब नहीं था तो चंदा भी बंद किया हुआ था। कहते हैं जो कुछ है इसके मुताबिक़ चंदा तो देना शुरू करूँ। मुरब्बी साहिब कहते हैं कि पिछले साल जून के महीने से चंदा देना शुरू किया और वह मुरब्बी साहिब को बता रहे हैं। कहते हैं अभी तीन महीने नहीं गुज़रे थे कि मुझसे एक दोस्त ने राबिता किया कि एक कंपनी को मार्केटिंग के लिए एक आसामी दरकार है और इस तरह इस कंपनी ने मुझे हायर कर लिया और इस कंपनी का यह अपनी तर्ज़ का पहला कॉन्ट्रैक्ट था। कहते हैं मुझे यक़ीन हो गया कि यह जो इतने अरसा के बाद मुझे मुलाज़मत मिली या मुझे कारोबार या काम मिला यह इस चंदे की बरकत से है।

फिर सेंट्रल अफ़्रीक़ा के मुरब्बी लिखते हैं जिब्रील साहिब एक नौ मुबाईन हैं उन्होंने कहा पिछले साल जब मैं जमात में दाख़िल हुआ तो मेरी अख़लाक़ी और रुहानी हालत में तबदीली आना शुरू हुई। यह भी काबिल-ए-ग़ौर चीज़ है कि सिर्फ जमाअत में शामिल नहीं हुए बल्कि दुआ यक़ीनन उन्होंने की होगी और अपनी हालत को बदलने की कोशिश भी की होगी और अल्लाह तआला का फ़ज़ल भी इस पर हुआ कि उन्होंने ख़ुद महसूस किया कि मेरी रुहानी और अख़लाक़ी हालत में तबदीली आ रही है। फिर कहते हैं कि एक दिन जब मुरब्बी ने वक़्फ़-ए-जदीद के चंदे की तहरीक की कि साल ख़त्म होने वाला है और चंदा देना चाहिए, बेशक थोड़ा दें। तो कहते हैं मैं ने चंदे की रसीद कटवा दी और इस वक़्त से लेकर आज तक मेरे काम में बहुत बरकत पड़ी। ख़ुदा का ख़ास फ़ज़ल हुआ। अब में काम से फ़ारिग़ नहीं बैठता। पहले कई कई दिन गाहक नहीं आते थे अब रोज़ाना की बुनियाद पर आते हैं और अल्लाह के फ़ज़ल से इतनी अच्छी रक़म कमा लेता हूँ कि जिसका में पहले तसव्वुर नहीं करता था।

फिर टोगो से मुरब्बी साहिब लिखते हैं कि कारा रीजन में आबा का जी (Abagagi) के एक साहिब हैं। वह कहते हैं मेरे माली हालात कोई अच्छे नहीं थे। वक़्फ़-ए-जदीद का आख़िरी महीना चल रहा था। फ़िक्र थी कि वादा कैसे पूरा करूँगा। फिर मेरे ज़हन में ख़्याल आया कि घर में एक छोटा सा बकरा है जो मैंने किसी और मक़सद के लिए रखा हुआ है वह बेच कर चंदा अदा कर देता हूँ। एक ही चीज़ है घर में और कुछ है नहीं। वही बैच के अदा कर देता हूँ। कहते हैं मैंने नीयत ही की थी कि एक दिन मिशनरी साहिब चंदा लेने आ गए। इसी रोज़ एक शख़्स ने मुझ से उधार पैसे लिए हुए थे उसकी वापसी की भी कोई उम्मीद नहीं थी वह भी उसी वक़्त पैसे वापिस करने आगया। इसलिए वह सारे पैसे कहते हैं मैंने वक़्फ़-ए-जदीद में अदा कर दिए। इस तरह अल्लाह तआला ने ग़ैब से मेरी मदद फ़र्मा दी।

नेकी का इरादा किया और इस पर अमल से पहले ही अल्लाह तआला ने इंतेज़ाम भी फ़र्मा दिया। महबूब चीज़ क़ुर्बान करने की तरफ़ तवज्जा की तो इस से पहले ही अल्लाह तआला नै-नवाज़ दिया क्योंकि वह दिलों के हाल जानता है।

मार्शल आईलैंड के साजिद इक़बाल साहिब कहते हैं यहां एक ख़ातून लोरीन (Loreen) साहिबा हैं। कहती हैं कि माली क़ुर्बानी की वजह से अल्लाह तआला ने मुझ पर और मेरे अहिल-ए-ख़ाना पर बहुत फ़ज़ल फ़रमाया है। पहले माली क़ुर्बानी में हिस्सा नहीं लेते थे क्योंकि यक़ीन नहीं था कि अल्लाह तआला क़ुर्बानी के बदले में कितनी बरकत फ़रमाता है और इस वक़्त पैसों की कमी भी थी। खाने पीने का सामान लेने के लिए पैसे नहीं होते थे और घर के अख़राजात पूरे करने में बहुत परेशानियाँ होती थीं लेकिन जब मस्जिद से माली क़ुर्बानी की बरकात के बारे में ख़ुतबात सुने तो सोचा कि क़ुर्बानी में हिस्सा लेना चाहिए। इसलिए कहती हैं हमने क़ुर्बानी करनी शुरू कर दी, चंदा देना शुरू कर दिया अब अल्लाह तआला का इतना फ़ज़ल है कि घर के अख़राजात भी पूरे हो जाते हैं। खाने पीने में भी कोई तंगी नहीं होती। कई बार ऐसा होता है कि ऐसी ऐसी जगहों से हमारे पास रकमें आ जाती हैं जिनका हमें तसव्वुर भी नहीं होता और जितना भी हम दें अल्लाह तआला उतना बढ़ाता चला जाता है। नौ मुबाईन के साथ भी अल्लाह तआला उनके ईमान को मज़बूत करने के लिए इस तरह यह सुलूक फ़रमाता है।

इंडिया से इन्सपैक्टर साहिब वक़्फ़-ए-जदीद कहते हैं जमाअत मेला पालम तामिल नाडू में वक़्फ़-ए-जदीद के बजट और वसूली की ग़रज़ से गया तो वहां एक मुख़लिस अहमदी से मुलाक़ात हुई। उन्होंने उन्हें कहा कि 2014 ई. में मैं ने बैअत की थी और जमात अहमदिया में शामिल होने की मुझे तौफ़ीक़ मिली थी। इस वक़्त यह नौ मुबाईन या अब तो नौ मुबाईन नहीं रहे बहरहाल वह अहमदी कहते हैं कि इस वक़्त जब मैंने बैअत की थी मैं ने अपना वक़्फ़-ए-जदीद का वादा चार हज़ार रुपय लिखवा कर अदायगी की थी क्योंकि मेरे पास इतनी ही गुंजाइश थी और हर साल मैं फिर इसके बाद हसब-ए-तौफ़ीक़ बढ़ाता भी चला गया और अल्लाह तआला इसकी वजह से कारोबार में भी नुमायां तरक़्क़ी देता चला गया। फिर कुछ अरसा के बाद बाक़ी घर के अफ़राद ने भी बैअत कर ली और कहते हैं अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आज मेरा वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा पाँच लाख रुपय हो गया है और इस गुज़शता साल उन्होंने रमज़ान के महीने में अपने पाँच लाख की मुकम्मल अदायगी भी कर दी थी। कहते हैं कि लॉक डाउन के बावजूद मेरे चंदों की बरकत की वजह से कारोबार में मुझे कोई नुक़्सान नहीं हुआ बल्कि मज़ीद बढ़ता चला गया और अल्लाह के फ़ज़ल से अब कारोबार इंडिया से निकल के थाईलैंड में भी फैला दिया है। कहते हैं कि यह सब चंदे की बरकात हैं। ये हैं अल्लाह तआला के फ़ज़ल। जुए की किस्म का कारोबार नहीं है। रुपया लगाया, मेहनत की, कारोबार किया, अल्लाह तआला की राह में ख़र्च किया तो अल्लाह तआला ने कई गुना इज़ाफ़ा भी दिया।

फिर इंडिया की एक और मिसाल है। वहां के मुरब्बी इंचार्ज ने लिखा है कि नाज़िम साहिब माल, इन्सपैक्टर साहिब वक़्फ़-ए-जदीद माली साल के अंत के पर मालापूरम केराला के दौरे पर थे। हमारे इलाक़े में भी आए तो वहां एक मुख़लिस अहमदी रहमान साहिब का फ़ोन आया जो बिज़नस करते हैं कि आप पहले मेरी कंपनी में आ जाएं। मैंने कंपनी अपनी बनाई है इस में एक नया हिस्सा बनाया है वहां दुआ करवानी है। और जब हम वहां गए तो बग़ैर पूछे दस लाख रुपय का चैक पेश किया। नीज़ दौरे के लिए अपनी बड़ी गाड़ी पैट्रोल वग़ैरा डलवा कर दी। उन्होंने कहा भी कि हमें छोटी गाड़ी ठीक है। उन्होंने कहा नहीं। मर्कज़ी नुमाइंदों के लिए अच्छी काबिल-ए--एतबार गाड़ी होनी चाहिए ताकि आप आराम से सफ़र कर सकें। कहते हैं यह रक़म मैंने अपनी एक प्रॉपर्टी की रजिस्ट्री के लिए रखी हुई थी मगर आपके आने की वजह से वक़्फ़-ए-जदीद में अदायगी कर दी है और रजिस्ट्री की तारीख़ आगे करवा ली है। चंद दिन के बाद उन्हों कहते हैं कि एक बड़ी रक़म उनको बग़ैर किसी ख़ास कोशिश के मिल गई जो उन्हों की ज़रूरियात से कहीं ज़्यादा थी। दस लाख से भी कहीं ज़्यादा रक़म थी।

मारीशस से एक ख़ातून शबरीज़ साहिबा हैं। कहती हैं मुझे अपने माता पिता की तरफ़ से सालगिरा के तोहफ़ा के तौर पर रक़म मिली। मैंने वक़्फ़-ए-जदीद और तहरीक जदीद में पाँच पाँच सौ रुपया देने का फ़ैसला किया जो मैं ने एक लिफ़ाफ़े में

रखे हुए थे। इस वक़्त बीमारी के दौर से गुज़र रही थी। इस दौरान मेरे एक चचा और मेरी कज़न मुझे मिलने आए, दोनों ने मुझे लिफ़ाफ़े दिए और हर एक में पाँच पाँच हज़ार थे। मैं यह देखकर हैरान रह गई कि अल्लाह तआला ने मुझे इस से दस गुना ज़्यादा इनाम दिया है।

फिर जॉर्जिया के सदर जमाअत कहते हैं कि एक मैंबर मुहम्मद अबू हम्माद साहिब हैं फ़लस्तीन से उनका ताल्लुक़ है। जॉर्जिया में बतौर मैडीकल स्टूडैंट तालीम हासिल कर रहे हैं। तीन साल क़बल उन्होंने बैअत की थी। जमाअत ने अशरा वक़्फ़--ए-जदीद पर सैमीनार आयोजित किया कि अल्लाह की राह में इस तरह ख़र्च करना चाहिए। तो कहते हैं उस वक़्त मेरे पास तक़रीबन तीन सौ डालर थे। मैंने फ़ैसला किया कि मैं इस में से आधे वक़्फ़-ए-जदीद में दे दूँगा क्योंकि मुझे वह आयत याद आ रही है। قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَكّٰىهَا अर्थात यक़ीनन वह कामयाब हो गया जो पाक हुआ। इसलिए चंदे की अदायगी और मामूल के अख़राजात के बाद मेरे बैंक एकाऊंट में महीने के आख़िर में सिर्फ दो डालर रह गए। यह स्टूडैंट ही हैं। दिसंबर के आख़िर पर फ़लस्तीन से मेरे रिश्तेदार जॉर्जिया आ रहे थे मुझे इस बात की फ़िक्र थी कि उनकी मेहमान-नवाज़ी किस तरह कर पाऊँगा लेकिन जिस दिन मेहमान आए उसी दिन अल्लाह तआला ने अपने ख़ास फ़ज़ल से बैंक एकाऊंट में किसी ज़रीया से एक हज़ार डालर ट्रांसफ़र करवा दिए। कहते हैं इस पर मैं अल्लाह तआला का हमेशा शुक्र अदा करता हूँ और इस को भी चंदे की बरकात समझता हूँ।

सोच की बात है, दुनियादार कुछ और सोचता है लेकिन एक दीनदार इन्सान यही सोचता है कि अल्लाह के फ़ज़ल उस की राह में ख़र्च करने की वजह से हो रहे हैं।

कीनीया के मुअल्लिम लिखते हैं उनकी जमाअत में एक नौ मुबाईन महिला ख़दीजा साहिबा नर्सरी स्कूल में टीचर हैं। वक़्फ़-ए-जदीद का वादा साल के शुरू में उन्होंने पाँच सौ शलंग लिखवाया। अदायगी भी कर दी। कहते हैं मैं उनको रसीद देने के लिए स्कूल गया तो अगले दिन वह मेरे घर आएं और अहलिया को बताया कि मज़ीद पाँच सौ चंदा इस मद में अदा करना चाहती हूँ। और कहती हैं कुल अदायगी एक हज़ार शिलाँग हो जाए। कहती हैं कि इस सोच के साथ यह कर रही हूँ कि अल्लाह तआला मज़ीद बरकत अता फ़रमाए। जब घर आया तो अहलिया ने मुझे बताया और फिर मैं ने रसीद काटी। कहते हैं उनको रसीद देने गया तो उन्होंने बताया कि मेरा एक बेटा है कॉलेज में पढ़ता है इसके अख़राजात के लिए मैंने दरख़ास्त दी हुई थी और वह मंज़ूर नहीं हो रही थी लेकिन आज ही मुझे कॉलेज से फ़ोन आया कि उसके अख़राजात जो तीस हज़ार शलंग थे हुकूमत की तरफ़ से स्कूल के एकाऊंट में जमा हो गए हैं। कहती हैं इस बात पर मुझे बड़ा सुकून है।

इंडोनेशिया के अमीर साहिब लिखते हैं कि अबदुर्रहीम साहिब एक जमाअत से ताल्लुक़ रखते हैं जो छोटी सी जमाअत है। वह कहते हैं कि हर साल वक़्फ़-ए-जदीद के वादे की अदायगी करता हूँ। उन्नीस और बीस मेरे लिए बहुत मुश्किल साल थे क्योंकि इस साल में मुझे नौकरी नहीं मिली थी। कुछ अरसा पहले कहते हैं मैं ने काम से अस्तीफ़ा दे दिया और कारोबार करने की कोशिश की। इस में भी कामयाबी नहीं हुई। जो बचत थी वह आहिस्ता-आहिस्ता ख़त्म हो गई। वक़्फ़-ए-जदीद का साल ख़त्म हो रहा था। चंदे का वादा मैंने किया हुआ था। अदायगी की कोई सूरत नहीं बन रही थी। मुलाज़मत मिलनी भी मुश्किल हो रही थी क्योंकि मेरी आयु 51 साल है। इस उम्र में मुलाज़मत मुश्किल से मिलती है। कहते हैं हर-रोज़ तहज्जुद में मैं दुआ करता था। और यहां मुझे भी यह ख़त लिखा करते थे कि वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा मैंने अदा करना है इस की मुझे सआदत मिल जाए। कहते हैं इसलिए वक़्फ़-ए--जदीद के साल के अंत तक अल्लाह तआला ने किसी न किसी तरह मुझे वादा के मुताबिक़ अदायगी करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मा दी। बहरहाल मैंने किसी तरह अदा कर दिया। कहते हैं अदायगी के चंद दिन बाद मुझे एक साबिक़ अफ़्सर जहां में काम करता था उसका फ़ोन आया कि मुझे इंटरव्यू के लिए आने का कहा गया है। तो अल्लाह का शुक्र अदा किया कि मुझे नौकरी मिल गई। मैं हैरान था क्योंकि जिस शख़्स ने मुझे बुलाया था वह मेरा डाइरेक्ट सुपरवाइज़र नहीं था। मेरे दोस्त भी इस उलझन में हैं कि मुझे ही क्यों बुलाया गया क्योंकि मैंने तो तक़रीबन सात साल पहले वहां से अस्तीफ़ा दे दिया था। कहते हैं यह भी अल्लाह का फ़ज़ल है कि मेरी मु-स्तक़िल आमदनी इस उम्र में शुरू गई।

सेनेगाल में तांबा कुंडा (Tambacounda) जगह है, वहां के मुरब्बी कहते हैं कि मेरे दौरे के दौरान एक जगह जब चंदे की तहरीक की गई और मैंने जो पिछले ख़ुत्बे में लोगों के वाक़ियात सुनाए थे उनको वहां सुनाया गया तो एक अहमदी उसमान साहिब ने बताया कि जब उन्होंने बैअत की तो उनकी माली हालत निहायत कमज़ोर थी और बैअत के बाद अपने बेगाने सब मुख़ालिफ़ हो गए। चार मर्तबा मुख़ालिफ़ीन ने उनके घर को जलाने की कोशिश की। हर मर्तबा घर का एक हिस्सा जल जाता मगर जब से कहते हैं जमाअती चंदों में हिस्सा लेना शुरू किया उनके दिन फिर गए हैं। कहते हैं चंदाजात की बरकत से अब उन्होंने अपना पक्का घर तामीर कर लिया है। पहले तो कुछ थोड़ी बहुत घास फूंस का था जो जल जाता था लेकिन अब पक्का तामीर कर लिया है। बच्चे भी शहर में अच्छी तालीम हासिल कर रहे हैं और हर साल दीगर चंदों की तरह वक़्फ़-ए-जदीद में भी काबिल-ए-ज़िक्र इज़ाफ़ा कर के अदायगी करते हैं और कहते हैं जो मेरे मुख़ालेफ़ीन थे वह या तो सब फ़ौत हो चुके हैं और अगर ज़िंदा भी हैं तो इंतेहाई मुश्किल की हालत में हैं।

तनज़ानिया के अमीर साहिब एक किसान का वाक़िया लिखते हैं। उनके टमाटर के खेत हैं और लेक विक्टोरिया से पानी लिफ़्ट कर के आबपाशी की जाती है और इस के लिए किराए पर मशीनें लेनी पड़ती हैं, पंप लेने पड़ते हैं। कहते हैं बारिशें इस साल कम हुईं। खेतों की हालत बहुत ख़राब हो गई। क़रीबी खेत वाले जो थे जो अपने खेतों को पानी लगाते थे उन पर हंसते थे कि तुम्हारी फ़सल का यह हाल हो रहा है। बहरहाल कहते हैं मुअल्लिम ने मुझे चंदों की तरफ़ तवज्जा दिलाई तो एक हज़ार शलंग था मेरे पास वह मैं ने अदा कर दिया। फिर मुअल्लिम ने रसीद काट दी और कहते हैं अगले दिन आमिला की मीटिंग में ये आए तो उन्होंने मुअल्लिम साहिब को बताया कि जो सौदा किया था मुझे उस का अज्र मिल गया है क्योंकि इस मौसम की पहली बारिश मेरे खेत पर बरसी है और पानी भर गया है। तो अल्लाह तआला ने इस तरह नवाज़ा।

सीरालियोन से मुरब्बी साहब लिखते हैं, कि अलकसटामो (Alextamu) साहिब टीचर और रेसरचर हैं। सीरालियोनी हैं। वह कहते हैं कि उनके चंदा वसीयत और दीगर चंदा जात में कुछ बक़ाया हो गया था क्योंकि गुज़शता साल बाज़ सरकारी मसायल की वजह से इदारे ने तनख़्वाहों की अदायगी में बहुत ताख़ीर की और कुछ अरसा के लिए ज़िंदगी इंतेहाई मुश्किल हो गई। बहरहाल उन्होंने कहीं से रक़म लेकर फ़ौरी बंद-ओ-बस्त किया और इस तंगी के दौर में भी चंदा वसीयत और दूसरे चंदे अदा कर दिए। कहते हैं कि चंदों की अदायगी के बाद पहले मुझे चावल के एक तहक़ीक़ी मंसूबे के लिए गिनी कनाकरी के वफ़द में मुंतख़ब किया गया। फिर एक बड़ा फ़र्निश्ड घर भी मिल गया। फिर यू.के के जलसा 2022 ई. से पहले मुझे घर में टी.वी और एम.टी.ए लगाने की भी तौफ़ीक़ मिल गई। फिर सबसे बढ़कर ख़ुदा तआला का फ़ज़ल यह हुआ कि जापान की कागोशीमा (Kagoshima) यूनीवर्सि-टी में पी.एच. डी करने के लिए स्कॉलरशिप आएं तो कहते हैं मैं ने भी अप्लाई कर दिया तो इदारे की जानिब से मुझे फ़ौक़ियत दी गई और वहां मुझे सिलेक्ट कर लिया गया और कहते हैं कि गुज़शता साल से मैं जापान में बैठा हूँ। जापान में भी अल्लाह के फ़ज़ल से जमाअत के साथ राबिता है और ख़ुदा का यह फ़ज़ल हुआ कि इदारे ने मेरी फ़ैमिली को न सिर्फ घर दिया है बल्कि तनख़्वाह का एक हिस्सा भी वहीं सीरा-लियोन में फ़ैमिली के लिए जारी रखा है। बहरहाल कहते हैं यह बात मेरे लिए ईमान में ज़्यादती का बाइस बनी हुई है कि चंदे की बरकात से अल्लाह तआला ने मुझ पर यह फ़ज़ल फ़रमाया।

अहमदियों बल्कि नौ मुबाईन में और भी अल्लाह तआला की ख़ातिर माल की मुहब्बत से बे-गुंबती की मिसालें हमें नज़र आती हैं। इसलिए सीरालियोन के मयामबा (Moyamba) रीजन के मुरब्बी लिखते हैं कि ख़ुतबा के दौरान वक़्फ़-ए-जदीद के हवाले से तवज्जा दिलाई गई कि एक-बार एक सहाबी कुलहाड़ा लेकर जंगल में चले गए और लकड़ियाँ काट कर बेचें और कमाई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम को पेश कर दी। कहते हैं क़रीब एक गांव डोडो (Dodo) है। वहां से अहमदी नमाज़-ए-जुमा के लिए आते हैं। उनमें से एक मुख़लिस अहमदी क़ासिम साहिब एक दिन तप्ती दोपहर में आए और एक बड़ी रक़म पेश की कि यह मेरी सारी कमाई है जो वक़्फ़-ए-जदीद में पेश करता हूँ। उनसे कहा गया कि इस में से अपने माहाना अख़राजात के लिए कुछ रक़म रख लें तो बड़े जोशीले अंदाज़ में कहने लगे कि जिस दिन आपने सहाबी का वाक़िया सुनाया था मैंने इसी रोज़ तहय्या कर लिया था कि इस वाक़िया पर अमल करना है इसलिए आप सारी रक़म रख लें। अल्लाह तआला मुझे ख़ुद ही नवाज़ेगा।

फिर तनज़ानिया के अमीर साहिब लिखते हैं कि श्यानगा रीजन के मुअल्लिम ने बताया कि वहां एक गांव संबाचाई (Simbachai) है। यह नई जगह है। जमाअत का नया पौधा वहां लगा है। नई जमाअत क़ायम हुई है। दिसंबर तक उनतालिस अफ़राद बैअत कर के जमात में शामिल हो चुके हैं। पिछले महीने ही यह जमात क़ायम हुई है। मुअल्लिम साहिब कहते हैं कि दिसंबर में अपने हलक़े की जमाअतों के दौरे पर था। इस नई जमात से भी गुज़र हुआ। यहां बैअत करने वाले ज़्यादा-तर

लोग पहले नास्तिक थे। मज़हब से उनका कोई ताल्लुक़ नहीं था इसलिए उनकी तर्बीयत के लिए नमाज़ और क़ुरआन की तरफ़ तवज्जा की जा रही है। नमाज़ ज़ुहर की अदायगी के बाद तर्बीयती क्लास हुई। इस में मुअल्लिम साहिब ने नमाज़ पढ़ने का तरीक़ और दीगर फ़िक़्ही मसाइल बताए। एक बुज़ुर्ग अहमदी ने मुअल्लिम साहिब के बैग में रसीद बुक देखी तो इस बारे में सवाल किया। मुअल्लिम साहिब ने बताया कि यह चंदा वक़्फ़-ए-जदीद के साल का आख़िरी महीना है और हमने अपने वादाजात के मुताबिक़ वसूली कर के मर्कज़ में रिपोर्ट देनी है ताकि ख़लीफ़ा के पास हमारी रिपोर्ट पहुंचे। जो अहमदी भी इस चंदे में शामिल होता है उनको चंदा की ये रसीद काट के दी जाती है। इस पर एक और अहमदी ने पूछा कि हमारा चंदा कब लेना है? मुअल्लिम ने कहा कि मैं ने उनको बताया कि मेरा ख़्याल था कि आपके हालात तंग हैं और नए नए अभी अहमदी हुए हैं। तर्बीयत की ज़रूरत है। अगले साल से आपको चंदे में शामिल किया जाएगा जिस पर समस्त नौ मुबाईन ने कहा कि इस साल फिर हमारा नाम ख़लीफ़तुल मसीह तक नहीं जाएगा? ऐसा नहीं हो सकता। इस पर वहां मौजूद समस्त अफ़राद ने जो कुछ उनके पास था अदा कर दिया। जब जाने लगा तो उन्होंने कहा कि मुअल्लिम साहिब। हमारे अगले साल के वादाजात भी अभी लेकर जाएं जिस पर उन्होंने नए साल के चंदा वक़्फ़-ए-जदीद के वादा जात भी लिखवाए। तो नौ मुबाईन में भी अल्लाह तआला इस तरह ईमान पैदा कर रहा है। इस तरह उनको ईमान से भर रहा है।

गेम्बया के अमीर साहिब लिखते हैं। नॉर्थ बैंक की एक जमात दूओतअ बालूओ (Dutabulu) में एक अहमदी दोस्त जालू (Jallow) साहिब हैं। उनके वालिद अहमदी नहीं हैं। वह गांव के चीफ़ हैं। बहुत बूढ़े और बीमार रहते हैं। इसलिए उनकी जगह उनके बेटे गांव के मुआमलात की देख-भाल करते हैं जो अहमदी हैं। उन्होंने बताया कि एक दिन एक इस्लामी एन.जी. ओ उनके गांव आई उनके मुताबिक़ वह मुस्लमानों की मदद सिर्फ पंद्रह हज़ार डलासी की रक़म से करते थे। कहते हैं उन्होंने मुझे फ़ोन कर के कहा कि हमने आपके बारे में सुना है कि आप बहुत शरीफ़ और अच्छे आदमी हैं। हम आपको और आपके वालिद को मदद के तौर पर तीस हज़ार डलासी देना चाहते हैं लेकिन मसला सिर्फ यह है कि आप अहमदी हैं। अगर आप जमाअत छोड़ दें तो आपको यह रक़म मिल जाएगी। इस पर जालू साहिब ने एन. जी. ओ को जवाब दिया मुझे पैसों की ज़रूरत नहीं है क्योंकि जमाअत ने हमें सिखाया है कि अल्लाह तआला अपने बंदों के लिए काफ़ी है और मैं तो हर साल जमाअत को पंद्रह हज़ार डलासी से ज़ायद चंदा अदा करता हूँ। यह सुनके वह बहुत हैरान हुए और कहने लगे कि इतनी बड़ी रक़म जमाअत को क्यों देते हो जबकि तुम ख़ुद एक ग़रीब आदमी हो। इस पर वह अहमदी कहने लगे कि अल्लाह तआला की जो नेअमतें और ख़ुशनुदी में हासिल कर रहा हूँ अगर उनका आपको इलम हो जाए तो आप भी इमाम महदी अलैहिस्सलाम की उम्मत का हिस्सा बन जाएं।

तो ये ईमानी हालत है जो अल्लाह तआला इन दूर दराज़ रहने वाले लोगों के दिलों में पैदा फ़र्मा रहा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ को मानने के बाद ईमान में मज़बूत से मज़बूत तर हो रहे हैं।

कांगो किंशासा के अमीर साहिब लिखते हैं कि जुमा के ख़ुतबा के दौरान चंदा वकफ़े जदीद के हवाले से तहरीक की गई। इसी रोज़ एक मुख़लिस अहमदी नूरुद्दीन साहिब जो कि पुलिस में मुलाज़िम हैं, उन्होंने हमारे मुअल्लिम को फ़ोन कर के बुलाया और कहा कि मैं कुछ अरसा से कुछ रक़म अपनी एमरजैंसी ज़रूरत के लिए इकट्ठी कर रहा था मगर आज ख़ुतबा जुमा में मुरब्बी साहिब ने चंदा वक़्फ़-ए-जदीद की तरफ़ जो तवज्जा दिलाई है तो इसलिए यह रक़म चंदा में रख लें। और चंदा वक़्फ़--ए-जदीद में दो लाख दस हज़ार फ्रॉंक की अदायगी की जो उनके लिहाज़ से बहुत ग़ैरमामूली क़ुर्बानी थी। तो यह है मुहब्बत करने वाले माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करने की मिसाल।

मेसीडोनिया के मुरब्बी लिखते हैं कि अहमदियों की अक्सरीयत तो यहां तक़रीबन बहुत ग़रीबों पर ही मुश्तमिल है लेकिन फिर भी वह माली क़ुर्बानियों में हिस्सा लेते हैं। एक अहमदी दोस्त फ़ैसल साहिब हैं जिन्हों ने 1995 ई. में जर्मनी में बैअत की थी। मुख़्तलिफ़ देशों में रहते रहे। बाद में मेसीडोनिया वापिस आ गए। शुरू में उनका जमाअत से राबिता भी कम था फिर उनसे राबिता हुआ। गुज़शता ईद-उल-अज़हा के अवसर पर उनका मिशन में दो तीन दिन क़ियाम रहा। इस दौरान उन्हें जमाअत के माली निज़ाम के बारे में बताया गया। लाज़िमी चंदाजात के इलावा दीगर माली क़ुर्बानियों, तहरीक जदीद और वक़्फ़-ए-जदीद के बारे में बताया गया। कहते हैं कि दस बारह दिन के बाद में उनसे मिलने शहर गया तो वापसी पर उन्होंने मुझे दस हज़ार दीनार की रक़म चंदा में दी जो इस लिहाज़ से मामूली रक़म है कि तक़रीबन तरेसठ यूरो बनती है। ये दोस्त बेरोज़गार हैं। काफ़ी अरसा से काम नहीं कर रहे। मैं ने कहा आप अपने हालात जानते हैं आप अपने हालात के मुताबिक़ कुछ अपने लिए रख लें और फ़ैमिली पर ख़र्च करें क्योंकि मेसीडोनिया के हालात के लिहाज़ से ये काफ़ी बड़ी रक़म थी। उन्होंने इसरार के साथ और ख़ुशी के साथ ये रक़म अपनी और अपनी फ़ैमिली की तरफ़ से वक़्फ़-ए-जदीद के चंदा में अदा कर दी कि अल्लाह तआला उनका इंतेज़ाम कर देगा।

तो बहरहाल ये लोग हैं जो क़ुर्बानियां करने वाले हैं। माल की उनको ज़रूरत है लेकिन जो इस को अल्लाह तआला की राह में देने वाले हैं

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "तुम्हारे लिए मुम्किन नहीं कि माल से भी मुहब्बत करो और ख़ुदा से भी। सिर्फ एक से मुहब्बत कर सकते हो।

अतः ख़ुश-क़िस्मत वह शख़्स है कि ख़ुदा से मुहब्बत करे और अगर कोई तुम में से ख़ुदा से मुहब्बत कर के इस राह में माल ख़र्च करेगा तो मैं यक़ीन रखता हूँ कि उसके माल में भी दूसरों की निसबत ज़्यादा बरकत दी जाएगी। क्योंकि माल ख़ुदबख़ुद नहीं आता बल्कि ख़ुदा के इरादा से आता है। अतः जो शख़्स ख़ुदा के लिए बाअज़ हिस्सा माल का छोड़ता है वह ज़रूर उसे पाएगा।" (मजमूआ इश्तेहारात, भाग 3 पृष्ठ 323 नज़ारत नशर व इशाअत कादियान 2019 ई.)

अतः हर क़ुर्बानी करने वाला अहमदी इस बात की सच्चाई पर गवाह है कि माल अल्लाह तआला की तरफ़ से आता है। आप जो कुछ फ़रमाया वह हक़ है। अल्लाह तआला इन क़ुर्बानी करने वालों के मयार को भी उनको बढ़ाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और जो ज़्यादा बेहतर हालात में लोग हैं, जिनके मयार क़ुर्बानी के आला नहीं हैं वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात को समझने वाले हों कि जहां आप फ़रमाया कि "मैं बार-बार तुम्हें कहता हूँ कि ख़ुदा तुम्हारी ख़िदमतों का ज़रा मुहताज नहीं। हाँ तुम पर यह उस का फ़ज़ल है कि तुमको ख़िदमत का मौक़ा देता है।" (इश्तेहारात, भाग 3 पृष्ठ 324 नज़ारत नशर व शाअत कादियान 2019 ई. वे लोग जो कंजूसी दिखाते हैं उनको इस बारे में ग़ौर करना चाहिए। अल्लाह तआला जमाअत के उमरा को भी इस बात को समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अब इस के बाद मैं पिछले साल के चंदा वक़्फ़-ए-जदीद के आदाद-ओ-शुमार वर्णन कर देता हूँ। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वक़्फ़-ए-जदीद का पैंसठवां वर्ष 31 दिसंबर को ख़त्म हुआ और नया साल यक्म जनवरी से शुरू हो गया है और जमाअत ने 12.2 मिलियन से ज़्यादा यानी एक करोड़ बाईस लाख और पंद्रह हज़ार (1,22,15,000) पाऊंडज़ की क़ुर्बानी पेश की। बावजूद दुनिया के आर्थिक हालात के बेहतर न होने के पिछेल वर्ष से ईआह क़ुर्बानी नौ लाख अट्ठाईस हज़ार (9,28,000) पाऊंड ज़्यादा है। अल्हम्दुलिल्ला।

बर्तानिया इस साल भी दुनिया की जमाअतों में वसूली के लिहाज़ से पहले नंबर पर है और बर्तानिया के बाद फिर नंबर दो पर कैनेडा। फिर जर्मनी नंबर तीन पर चला गया है। फिर अमरीका है नंबर चार पर। नंबर पाँच पर भारत है। फिर आस्ट्रेलिया। फिर सातवें नंबर पर मिडल ईस्ट की एक जमाअत है। फिर आठवीं पर इंडोनेशिया है। नौवीं पर फिर मिडल ईस्ट की एक जमाअत है। दसवें पर बैलजियम है।

प्रति व्यक्ति अदायगी के लिहाज़ से अमरीका नंबर एक है। स्विटज़रलैंड नंबर दो है। बर्तानिया नंबर तीन है। आस्ट्रेलिया नंबर चार है और कैनेडा नंबर पाँच है।

अफ़्रीक़ा की जमाअतों में नुमायां वसूली करने वाले जो हैं उनमें नंबर एक पर घाना है। नंबर दो पर मारीशस है। नंबर तीन पर नाईजेरिया है। नंबर चार बुर्कीना फासो। पाँच तनज़ानिया। छः लाइबेरिया। सात गेम्बया। आठ योगंडा। नौ सैरालि-योन। दस बेनिन

शामिल होंने वालों की तादाद के लिहाज़ से इस साल मुख़लेसीन में 61 हज़ार का इज़ाफ़ा हुआ है मजमूई संख्या 15 लाख 6 हज़ार हो गई और शामिल होने वालों में इज़ाफ़ा के लिहाज़ से जिन देशों ने काम किया उनमें योगंडा नंबर एक पर है। गिनी बसाऊ। फिर कैमरोन। फिर कांगो बराज़ा। फिर नाईजेरिया। कांगो किंशासा और फिर आख़िर में बंगलादेश, ये काबिल-ए-ज़िक्र हैं।

वसूली के लिहाज़ से बर्तानिया की जो दस बड़ी जमाअतें हैं उनमें फ़ारनहम (Farnham) नंबर एक। वोस्टर पार्क (Worcester Park) नंबर दो। वॉलसॉल (Walsall) तीन। इस्लामाबाद चार। जिलंघम (Gillingham) पाँच। साउथ चीम (South Cheam)छः। आलडर शॉट साउथ (Aldershot south) सात। ब्रैडफोर्ड आठ। चीम नौ। इवल (Ewell) दस

और रीजनज़ जो हैं उनमें बैतुल फ़तूह रीजन नंबर एक पर है। इस्लामाबाद नंबर दो पर। मस्जिद फ़ज़ल तीन पर। मिडलैंडज़ (Midlands) चार और बैतुल अहसान

पाँच।

दफ़्तर अतफ़ाल के लिहाज़ से दस जमाअतें जो हैं उनमें नंबर एक पर आलडर साउथ (Aldershot South) फिर इस्लामाबाद। फिर वॉलसॉल (Walsall) फिर फ़ारनहम (Farnham) फिर रोहैंपटन वेल (Roehampton Vale) आलडर शॉट नॉर्थ। फिर मचम पार्क (Mitcham Park) बोर्डन। साउथ चीम। बैतुल फ़तूह (Baitul Futuh)

छोटी जमाअतों में वसूली के लिहाज़ से पाँच जमातें हैं सपन वैली। कैथली। नॉर्थ वेल्ज़ (North Wales) नॉर्थ हैंपटन और सवानज़ी कैनेडा की इमारतें जो हैं उनमें नंबर एक पर वान। फिर वेनकोवर (Vancouver) फिर कैलगरी (Calgary) फिर पीस विलेज (Peace Village) फिर टोरांटो। ब्रैम्पटन वैस्ट (Brampton--West)

और कैनेडा की दस बड़ी जमाअतें जो हैं। पहले जो थीं इमारतें थीं। ये जमातें हैं। मिल्टन वैस्ट (Milton-West) नंबर एक। हदीक़तुल महदी नंबर दो। मिल्टन ईस्ट (Milton East) तीन। विन्नी पैग (Winnipeg) चार। सुस्का टोन बैतुल रहमत पाँच। डरहम वैस्ट (Durham West) छः। आटवा वैस्ट (Ottawa--West) सात। अनस फल (Innisfil) आठ। रजायना (Regina) नौ और ऐबटस फ़ोर्ड (Abbotsford) दस

अतफ़ाल में वान (Vaughan) नंबर एक पर। फिर पीस विलेज (Peace Village) फिर टोरांटो वैस्ट (Toronto-West) फिर कैलगरी (Calgary) ब्रैम्पटन ईस्ट (Brampton-East)

दफ़्तर अतफ़ाल की पाँच नुमायां जमाअतें जो हैं, पहले इमारतें थीं अब जमाअतें हैं। एर्डरी (Airdrie)सैंट कैथरीनज़ (Saint Catharines) हदीक़ा अहमद। अनसफल (Innisfil) ब्रैडफोर्ड ईस्ट (Bradford East)

जर्मनी की पाँच इमारात जो हैं, नंबर एक पर हैमबर्ग (Hamburg) नंबर दो फ़्रैंकफ़र्ट (Frankfurt) नंबर तीन वेज़ बादिन (Wiesbaden) फिर ग्रोस गैराओ (Gros Gerau) औररेड स्टड (Riedstadt)

और दस जमाअतें जो हैं उनमें रोडर मारक (Rödermark) रोडगाओ (Rodgau) फिर माइनज़ (Mainz) हलक़ा बैतुल रशीद। नवयस् (Neuss) फ्लोर्स हाइम (Flörsheim) नेदा (Nidda) महदी आबाद। फ्रेड बर्ग (Friedberg) और कोबलनज़ (Koblenz)

अतफ़ाल में पाँच रीजनज़ ह्यसन् मिटे (Hessen-Mitte) ह्यसन् साउथ वैस्ट (Hessen South West) हैमबर्ग (Hamburg) ताऊनस (Taunus) और वेज़ बादिन (Wiesbaden)

अमरीका की दस जमाअतें जो हैं उनमें नंबर एक पर मेरी लैंड (Maryland) फिर नॉर्थ वर्जीनिया। फिर लास ऐंजलिस (Los Angeles) फिर डेट्रॉइट (Detroit) सिलेकोन वैली (Silicon Valley) फिर बोस्टन (Boston) फिर ऑस्टन (Aston) फिर अवश् कोष। फिर रो चिसटर। फिर फ़ैंकस (Phoenix)

अतफ़ाल की दस जमाअतें जो हैं उनमें साउथ वर्जीनिया। नॉर्थ वर्जीनिया। मेरीलैंड (Maryland) सेइटल (Seattle) ओरलैंडो Orlando) ऑस्टन Aston) सिलेकोन वैली (Silicon Valley) अवश् कोष। पोर्ट लैंड। ज़ाइन (Zion)

पाकिस्तान की पहली तीन जमाअतें पाकिस्तान में बावजूद न मुसाइद मआशी हालात के मुक़ामी करंसी में उन्होंने अल्लाह के फ़ज़ल से काफ़ी इज़ाफ़ा किया है। पाऊंड के मुक़ाबले में भी उनकी करंसी की वैल्यू बिल्कुल ख़त्म हो गई है इस के बावजूद उनकी अच्छी है।

जमाअतों में अव्वल लाहौर है। फिर रबवाह है। फिर सोम कराची है और ज़िलों में इस्लामाबाद नंबर एक पर है। फिर स्यालकोट है। फिर फैसलाबाद। गुजरात। गुजरांवाला। सरगोधा। अमरकोट और मुल्तान। मीर-पुरख़ास और डेरा ख़ान।

और वसूली के लिहाज़ से दस जमाअतें इस्लामाबाद शहर। डीफ़ैंस लाहौर। टाउन शिप लाहौर। दारुल कर्ज़ लाहौर। मॉडल टाउन लाहौर। अल्लामा इक़बाल टाउन लाहौर। रावलपिंडी शहर। अज़ीज़ आबाद कराची। सुमन आबाद लाहौर। मुग़ल पूरा हैं।

दफ़्तर अतफ़ाल में जो तीन बड़ी जमाअतें हैं इन में अव्वल लाहौर है। दोयम रबवाह। सोयम कराची।

ज़िलों की पोज़ीशन दफ़्तरा अतफ़ाल में इस्लामाबाद नंबर एक पर। फिर स्याल-कोट। फिर फैसलाबाद । सरगोधा। उम्रकोट। मीरपुर ख़ास। नारोवाल। ननकाना साहिब और जहलुम। फिर कोयटा।

ग़ैरमामूली मसाई करने वाली छोटी जमाअतें भी हैं ये। छोटी तो नहीं उनमें बड़े शहर भी शामिल हैं। गुजरांवाला शहर है। गुलशन जामी कराची। सदर कराची । रावलपिंडी कैन्ट। बैतुल फ़ज़ल फैसलाबाद। करीम नगर फैसलाबाद। स्यालकोट शहर। पेशावर। सरगोधा। ओकाड़ा।

भारत के पहले दस सूबाजात जो हैं इस में केराला। तामिल नाडू। कर्नाटका। जम्मू कश्मीर। तिलंगाना। उडीसा। पंजाब। वैस्ट बंगाल। महाराष्ट्रा। दिल्ली

पहली दस जमाअतें जो हैं उनमें कोयमबाटूर। फिर हैदराबाद। फिर कादियान। फिरकैरोलाई।फिरपित्तापीरम।फिरबैंगलौर।फिरमलयापालम(Melepalayam) फिर कलकत्ता। फिर कालीकट। फिर केरंग।

आस्ट्रेलिया की दस जमाअतें जो हैं उनमें पहले नंबर पर कासल हिल (Castle Hill) फिर मेलबर्न लाँग वार्न (Melbourne Langwarrin) मारसिडन पार्क (Marsden Park)फिर लोगन ईस्ट (Logan East) फिर मैलबोर्न बेरोक (Melbourne Berwick) पैनर्थ (Penrith) प्रथ (Perth) एडीलेड साउथ (Adelaide South) मलबर्न कलाईड। एडीलेड वैस्ट (Adelaide West)

बालिग़ान में उनकी जमाअतें जो हैं। वह कासल हिल (Castle Hill) मैलबोर्न लाँग वार्न (Melbourne Langwarrin) मारसिडन पार्क (Marsden Park) मैलबोर्न बेरोक (Melbourne Berwick) लोगन ईस्ट (Logan East) पैनर्थ (Penrith) प्रथ Perth) एडीलेड साउथ (Adelaide South) एडीलेड वैस्ट (Adelaide West) मैलबोर्न कलाईड

अतफ़ाल में नंबर एक पर मैलबोर्न लाँग वार्न (Melbourne Langwarrin) फिर लोगन ईस्ट (Logan East) फिर पीनरिथ Penrith) फिर प्रथ (Perth) फिर कासल हल (Castle Hill) फिर मलबर्न क्लाउड (Clyde) फिर एडीलेड साउथ (Adelaide South) फिर मलबर्न बेरोक (Melbourne Berwick) फिर माउंट डरोइट (Mount Druitt) फिर मलबर्न वैस्ट (Melbourne West)

अल्लाह तआला सब शामिल होने वालों के धन और सेहत में बे-इंतिहा बरकत अता फ़रमाए

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

सकती है । अगर दुनिया को मालूम हो जाए कि यह कलाम ख़ुदा तआला की तरफ़ से है तब तो वे अपने ख़्यालात को छोड़ देगी, उस के बग़ैर वे किस तरह अपने ख़्यालात को छोड़ सकती है क्योंकि स्वभाविक रूप से प्रत्येक शख़्स अपने ख़्यालात को दूसरों के ख़्यालात हर पर प्राथमिकता देता है।

इस आयत में इस तरफ़ भी इशारा है कि तुमको पहले नबियों के बाद दूसरे नबी के आने पर आपत्ति है । दूसरा नबी तो ख़ुद तुम्हारे आमाल की वजह से आया है, तुमने सच्चाई को छोड़कर इख़तेलाफ़ क्यों किया। तुम इख़तेलाफ़ न करते तो बे-शक नबी की ज़रूरत न होती मगर तुमने मर्ज़ तो पैदा कर लिया अब कहते हो कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से किसी इख़तेलाफ़ को दूर करने वाले शख़्स की आमद की ज़रूरत नहीं।

ऊपर वर्णित मज़मून पर यह प्रशन किया जा सकता है कि फ़र्ज़ करो लोग हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम की शरीयत पर ही अमल करते रहते और इख़तेलाफ़ न करते तो क्या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया कामिल शरीयत या कामिल तालीम न आती? इस का उत्तर यह है कि यह फ़र्ज़ी कलाम है। हक़ीक़तन न इख़तेलाफ़ करने से लोगों ने रुकना था और न उस तालीम के आने में रोक पैदा होनी थी। मगर बफ़रज़ेमुहाल ऐसी सूरत होती भी तो अल्लाह तआला ने इस का यह जवाब दिया है कि لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا। (बनी इसराईल : 11) अगर दुनिया में सब फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते होते यानी सब के सब इन्सान नेक होते तो हम उनमें से हर एक शख़्स पर अपना कलाम नाज़िल करते अर्थात इस सूरत में एक नबी क़ौम की तरफ़ न भेजा जाता बल्कि सब ही नबी हो जाते और इंकार और कुफ़्र का सवाल ही न पैदा होता। परंतु न दुनिया सबकी सब नेक बनी न ख़ुदा तआला ने नबियों के सिलसिला को बंद किया।

هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ में मज़मून के दूसरे पहलू को लिया कि जो इख़तेलाफ़ करते हैं इन के लिए तेरा यह काम है कि क़ुरआन-ए-करीम के रोओ से उनके इख़तेलाफ़ दूर करे और जो मोमिन हैं उन के लिए तरक़्क़ी मदारिज और रहमत के हुसूल का ज़रीया इस क़ुरआन को बनाए। (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 189, मुद्रित 2010 कादियान)

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो मर्तबा फ़रमाया मुझे नमाज़ पढ़ने वालों के क़तल से मना किया गया है यह आजकल के मुस्लमानों के लिए सबक़ है

इख़लास-ओ-वफ़ा के पैकर कुछ बदरी सहाबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत सालेह शकरान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मालिक बिन दुख़शम रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत उकाशा रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ख़ालिद बिन बुकेर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हो की सीरत के कुछ पहलूओं का वर्णन

महदी आबाद बुर्कीना फासो में 9 अहमदियों की अफ़सोसनाक शहादत, शुहदा की बुलंद ई दर्जात तथा बुर्कीना फासो के हालात के लिए अहबाब-ए-जमाअत को की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 जनवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जैसा कि मैंने पिछले एक ख़ुतबा में बताया था कि कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के वर्णन का कुछ हिस्सा रह गया है वह वर्णन करूँगा तो आज उसी सिलसिला में हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में पहले वर्णन होगा। आपका ताल्लुक़ क़बीला बनू असद से था और क़बीला के मुताल्लिक़ कुछ कहते हैं कि आप बनी अबद शमस के हलीफ़ थे जबकि कुछ के नज़दीक हर्ब बिन उमय्या के हलीफ़ थे। (اسد الغابة فی معرفة الصحابة، جلد 3، صفحہ 195، عَبْدُاللہ بِنْ جَحْش، دار الکتب العلمیة بیروت 2003ء)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो की लंबाई चौड़ाई के बारे में आता है कि न लंबा क़द था, न ही छोटे थे। आपके सिर के बाल निहायत घने थे। (अल् तबकातुलकुबरा ले इब्ने साद, भाग 3, पृष्ठ 67 अब्दुल्लाह बिन हजश दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

एक मुहिम के अवसर पर आपको अमीर निर्धारित करते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो इरशाद फ़रमाया वह आपकी सख़्त-जानी, मुस्तक़िल मिज़ाजी और बे-ख़ौफ़ी का इज़हार करता है। हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मैं तुम पर एक ऐसे आदमी को अमीर निर्धारित कर के भेजूँगा जो अगरचे तुमसे ज़्यादा बेहतर नहीं होगा लेकिन भूख और प्यास की बर्दाश्त मैं तुमसे ज़्यादा मज़बूत होगा। फिर वह कहते हैं कि हम लोग हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो की इमारत में मक्का और तायफ के दरमयान वादिए नख़ला की तरफ़ गए।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग 1 पृष्ठ 481-482 मस्नद साद बिन अबी वक्कास हदीस 1539 मुद्रित आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई.)(सीरतुल नब्विय्या लेइब्ने कसीर, भाग 2 पृष्ठ 365-366 ذِكْرُ أَوَّلِ الْمَغَازِي وَهِيَ غَزْوَةُ الْأَبْوَاءِ ، मुद्रित दारुल मारूफ़ बेरूत 1976 ई.)

इस मुहिम में कामयाबी के बाद जो माल-ए-ग़नीमत मिला उसके बारे में लिखा है कि इस सरिया से हासिल होने वाले माल-ए-ग़नीमत के विषय में बाअज़ का ख़्याल है कि यह पहला माल-ए-ग़नीमत है जिसको मुस्लमानों ने हासिल किया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस माल-ए-ग़नीमत को पाँच हिस्सों में बाँट करके बक़ीया चार हिस्सों को तक़सीम कर दिया और एक को बैतुल माल के लिए रख लिया। यह पहला ख़ुमस् था जो इस्लाम में इस दिन निर्धारित हुआ। (ओसोदुल गाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाब, भाग 3 पृष्ठ 195 अब्दुल्लाह बिन जह्श, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

इमाम शाबी से रिवायत है कि इस्लाम में सबसे पहले झंडे की इबतेदा हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो ने की। तथा सबसे पहला माल-ए--ग़नीमत हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो का हासिल किया हुआ तक़सीम किया गया।

(حلیة الاولیاء وطبقات الاصفیاء، جلد 1، صفحہ 108، عَبْدُ اللہِ بْنِ جَحْشٍ، دار الفکر بیروت 1996ء)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में उनके बारे में फ़रमाते हैं कि कुर्ज़ बिन जाबिर यह मक्का का एक रईस था जिसने क़ुरैश के एक दस्ता के साथ कमाल--ए-होशियारी से मदीना की चरागाह पर जो शहर से सिर्फ तीन मील के फ़ासले पर थी अचानक छापा मारा। (यह और मुहिम है) और मुस्लमानों के ऊंट इत्यादि हाँक कर ले गया। इस के अचानक हमले ने तबा मुसलमानों को बहुत जंगली कर दिया और चूँकि क़ुरैश के सरदारों की यह धमकी पहले से मौजूद थी कि हम मदीना पर हमला-आवर हो कर मुस्लमानों को तबाह और बर्बाद कर देंगे, मुस्लमान सख़्त फ़िक्रमंद हुए और इन्ही ख़तरात को देखकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह इरादा फ़रमाया कि क़ुरैश की हरकात व सकनात का ज़्यादा क़रीब से हो कर इलम हासिल किया जाए ताकि उसके मुताल्लिक़ हर किस्म की ज़रूरी सूचना बरवक़्त मयस्सर हो जाए और मदीना हर किस्म के अचानक हमलों से महफ़ूज़ रहे। (हाँ ये जो पहले वर्णन हो चुका है वह इसी मुहिम के बारे में आप फ़र्मा रहे हैं) फिर कहते हैं इसलिए इस ग़रज़ से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आठ मुहाजेरीन की एक पार्टी तैयार की और मस्लहतन इस पार्टी में ऐसे आदमियों को रखा जो क़ुरैश के मुख़्तलिफ़ क़बायल से ताल्लुक़ रखते थे ताकि क़ुरैश के मख़फ़ी इरादों के मुताल्लिक़ ख़बर हासिल करने में आसानी हो और इस पार्टी पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने फूफीज़ाद भाई अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो को निर्धारित फ़रमाया। और इस ख़्याल से कि इस पार्टी की ग़रज़ व ग़ाएत आम मुसलमानो से भी मख़फ़ी रहे। सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस सरिया को रवाना करते हुए उस सरिया के अमीर को भी यह नहीं बताया कि तुम्हें कहाँ और किस ग़रज़ से भेजा जा रहा है बल्कि चलते हुए उसके हाथ में एक मुहरबंद ख़त दे दिया और फ़रमाया इस ख़त मैं तुम्हारे लिए हिदायात दर्ज हैं। गो यह हवाला पहले कुछ हद तक बयान हो चुका है लेकिन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से नहीं वर्णन हुआ था। बहरहाल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें फ़रमाया कि जब तुम मदीना से दो दिन का सफ़र तै करलो तो फिर उस ख़त को खोल कर उसकी हिदायात के मुताबिक़ अमल दरआमद करना। इसलिए अब्दुल्लाह और उन के साथी अपने आक़ा के हुक्म के मातहत रवाना हो गए और जब दो दिन का सफ़रते कर चुके तो अब्दुल्लाह ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमान को खोल कर देखा तो इस में ये अलफ़ाज़ दर्ज थे कि तुम मक्का और तायफ के दरमयान वादिए नख़ला में जाओ और वहां जा कर क़ुरैश के हालात का इल्म लो और फिर हमें सूचित कर दो और

चूँकि मक्का से इस क़दर क़रीब हो कर ख़बर रसानी करने का काम बड़ा था।

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़त के नीचे यह हिदायत भी लिख दी कि इस मिशन के मालूम होने के बाद अगर तुम्हारा कोई साथी इस पार्टी में शामिल रहने से मता हो और वापस चला आना चाहे तो उसे वापस आने की इजाज़त दो।

अब्दुल्लाह ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह हिदायत अपने साथियों को सुना दी और सब ने एक ज़बान हो कर कहा कि हम बख़ुशी इस ख़िदमत के लिए हाज़िर हैं। इस के बाद यह जमाअत नख़ला की तरफ़ रवाना हुई। रास्ता में जब मुक़ाम बहरान मे पहुंचे तो साद बिन अबी वक़ास और उत्बा बिन ग़ज़वान का ऊंट खो गया और वह उसकी तलाश करते करते अपने साथियों से बिछड़ गए और बावजूद बहुत तलाश के उन्हें न मिल सके और अब यह पार्टी सिर्फ छः कस की रह गई। (साद बिन अबी वक़ास के ज़िमन में इसका कुछ हिस्सा वर्णन हुआ था)

फिर लिखते हैं कि मिस्टर मार्गो लैस इस अवसर पर लिखते हैं कि साद बिन अबी वक़ास और उतबा ने जान-बूझ कर अपना ऊंट छोड़ दिया और इस बहाना से पीछे रह गए। आप लिखते हैं कि इन इस्लाम पर जांनिसार करने वालों की जिनकी ज़िंदगी का एक एक वाक़िया उनकी बहादुरी और कुर्बानी पर शाहिद है ओरिजिन में से एक ग़ज़वा बेअरे माऊन में कुफ़्फ़ार के हाथों शहीद हुआ और दूसरे कई ख़तरनाक मारकों में नुमायां हिस्सा लेकर अंततः इराक़ का फ़ातेह बना, इस किस्म का शुबा करना और शुबा भी महिज़ अपने मनघड़त ख़्यालात की बिना पर करना मिस्टर मार्गो लैस ही का हिस्सा है। लिखते हैं कि फिर लुतफ़ यह है कि मार्गो लैस साहिब अपनी किताब में दावा यह करते हैं कि मैं ने यह किताब हर किस्म के तास्सुब से पाक हो कर लिखी है। बहरहाल यह जुमला मोतरिज़ा था। लिखते हैं कि मुस्लमानों की यह छोटी सी जमाअत नख़ला पहुंची और अपने काम में व्यस्त हो गई और उन में से बाअज़ ने इख़फ़ा-ए-राज़ के ख़्याल से अपने सिर के बाल मुंडवा दिए ताकि राहगीर इत्यादि उनको उमरा के ख़्याल से आए हुए लोग समझ कर किसी किस्म का शुबा न करें लेकिन अभी उनको वहां पहुंचे ज़्यादा अरसा न गुज़रा था कि अचानक वहां क़ुरैश का एक छोटा सा क़ाफ़िला भी आन पहुंचा जो तायफ से मक्का की तरफ़ जा रहा था और हर दो जमाअतें एक दूसरे के सामने हो गईं। मुस्लमानों ने आपस में मश्वरा किया कि अब क्या चाहिए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको ख़ुफ़ीया ख़ुफ़ीया ख़बर रसानी के लिए भेजा था लेकिन दूसरी तरफ़ क़ुरैश से जंग शुरू हो चुकी थी और अब दोनों हरीफ़ एक दूसरे के सामने थे और फिर तबन यह अंदेशा भी थाकि अब जो क़ुरैश के इन क़ाफ़िला वालों ने मुस्लमानों को देख लिया है तो इस ख़बर रसानी का राज़ भी मख़फ़ी न रह सकेगा। एक दिक़्क़त यह भी थी कि बाअज़ मुस्लमानों को ख़्याल था कि शायद यह दिन रजब यानी शहर-ए-हराम का आख़िरी है जिसमें अरब के क़दीम दस्तूर के मुताबिक़ लड़ाई नहीं होनी चाहिए और बाअज़ समझते थे कि रजब गुज़र चुका है और शाबान शुरू है और बाअज़ रवायात में है कि यह सरिया जमादिउल आखिर में भेजा गया था और शक यह था कि यह दिन जमादी का है या रजब का। लेकिन दूसरी तरफ़ नख़ला की वादी ऐन-ए-हर्म के इलाक़ा की हद पर वाक़्य थी और यह ज़ाहिर था कि अगर आज ही कोई फ़ैसला न हुआ तो कल कोई क़ाफ़िला हर्म के इलाक़ा में दाख़िल हो जाएगा जिसकी हुर्मत यक़ीनी होगी। ग़रज़ इन सब बातों को सोच कर मुस्लमानों ने आख़िर यही फ़ैसला किया कि क़ाफ़िला पर हमला कर के या तो क़ाफ़िला वालों को क़ैद कर लिया जाए और या मार दिया जाए। इसलिए उन्होंने अल्लाह का नाम लेकर हमला कर दिया जिसके नतीजा में कुफ़्फ़ार का एक आदमी जिसका नाम अम्रो बिन हज़रमी था मारा गया और दो आदमी क़ैद हो गए लेकिन बदकिस्मती से चौथा आदमी भाग कर निकल गया और मुस्लमान उसे पकड़ न सके और इस तरह उनकी तजवीज़ कामयाब होते होते रह गई। इस के बाद मुस्लमानों ने क़ाफ़िला के सामान पर क़बज़ा कर लिया और चूँकि क़ुरैश का एक आदमी बच कर निकल गया था और यक़ीन था कि इस लड़ाई की ख़बर जल्दी मक्का पहुंच जाएगी। अब्दुल्लाह बिन हजश और उन के साथी सामान ग़नीमत लेकर जल्दी जल्दी मदीना की तरफ़ वापस लौट आए।

लिखते हैं कि मिस्टर मार्गो लैस इस अवसर पर लिखते हैं कि वास्तव मे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने यह दस्ता दीदा दानिस्ता इस नीयत से शहर हराम में भेजा था कि चूँकि इस महीना में क़ुरैश तबा ग़ाफ़िल होंगे। मुस्लमानों को उन के क़ाफ़िलों को लौटने का आसान और यक़ीनी अवसर मिल जाएगा लेकिन हर अक़लमंद इन्सान समझ सकता है कि ऐसी मुख़्तसर पार्टी को इतने दूर दराज़ इलाक़ा में किसी क़ाफ़िला की ग़ारतगरी के लिए नहीं भेजा जा सकता विशेषता जबकि दुश्मन का हेडक्वार्टर इतना क़रीब हो और फिर यह बात तारीख़ से क़तई तौर पर साबित है कि यह पार्टी महिज़ ख़बर रसानी की ग़रज़ से भेजी गई थी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब यह इलम हुआ कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ाफ़िला पर हमला किया था तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सख्त नाराज़ हुए। इसलिए रिवायत है कि जब यह जमात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सारे माजरा की सूचना हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सख़त नाराज़ हुए और फ़रमाया कि मैंने तुम्हें शहर-ए--हराम में लड़ने की इजाज़त नहीं दी हुई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माल-ए-ग़नीमत लेने से इंकार कर दिया।

इस पर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु और उन के साथी सख़्त नादिम और पशेमान हुए। और उन्हों ने ख़्याल किया कि बस अब हम ख़ुदा और उस के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नाराज़गी की वजह से हलाक हो गए। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी उनको सख़्त मलामत की और कहा कि तुमने वह काम किया जिसका तुमको हुक्म नहीं दिया गया था और तुम ने शहर--ए-हराम में लड़ाई की हालाँकि इस मुहिम में तो तुम को मुतल्लिक़न लड़ाई का हुक्म नहीं था। दूसरी तरफ़ क़ुरैश ने भी शोर मचाया कि मुस्लमानों ने शहर-ए--हराम की हुर्मत को तोड़ दिया है और चूँकि जो शख़्स मारा गया था अर्थात अम्र बिन हज़रमी वह एक रईस आदमी था और फिर वह अतबा बिन रबीया रईस--ए-मक्का का हलीफ़ भी था इस लिए भी इस वाक़िया ने क़ुरैश की आतिश ग़ज़ब को बहुत भड़का दिया और उन्होंने आगे से भी ज़्यादा जोशो ख़रोश के साथ मदीना पर हमला करने की तैयारी शुरू कर दी। इसलिए जंग बदर ज़्यादा तर क़ुरैश की इसी तैयारी और जोश-ए-अदावत का नतीजा था। अल्-ग़र्ज़ इस वाक़िया पर मुस्लमानों और कुफ़्फ़ार हर दो में बहुत चेमगोइयां हुईं और अंततः नीचे की क़ुरआन की वह्यी नाज़िल हो कर मुस्लमानों की तश्फ़ी का मूजिब हुई। और वह यह है कि

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ۭ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۭ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۡ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۭ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا

(अल्बक़रा : 218) अर्थात लोग तुझ से पूछते हैं कि शहर-ए-हराम में लड़ना कैसा है? तो उनको उत्तर दे कि बे-शक शहर-ए-हराम में लड़ना बहुत बुरी बात है लेकिन शहर-ए-हराम में ख़ुदा के दीन से लोगों को जबरन रोकना बल्कि शहर-ए-हराम और मस्जिद हराम दोनों का कुफ़्र करना अर्थात उनकी हुर्मत को तोड़ना और फिर हर्म के इलाक़ा से उसके रहने वालों को बुज़ूर निकालना जैसा कि हे मश्रिक़ो तुम लोग कर रहे हो ये सब बातें ख़ुदा के नज़दीक शहर-ए-हराम में लड़ने की निसबत भी ज़्यादा बुरी हैं और यक़ीनन शहर-ए--हराम में मुल्क के अंदर फ़ित्ना पैदा करना इस क़तल से बदतर है जो फ़ित्ना को रोकने के लिए किया जाए और ए मुसलमानो! कुफ़्फ़ार का तो यह हाल है कि वह तुम्हारी अदावत में इतने अंधे हो रहे हैं कि किसी वक़्त और किसी जगह भी वह तुम्हारे साथ लड़ने से बाज़ नहीं आएँगे और वह अपनी यह लड़ाई जारी रखेंगे यहाँ तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें इस शर्त के साथ कि वह उस की ताक़त पाउं।

इसलिए तारीख़ से साबित है कि इस्लाम के ख़िलाफ़ क़ुरैश के सरदार अपने ख़ूनी प्रापेगंडा को अशहर-ए-हराम में भी बराबर जारी रखते थे बल्कि अशहर--ए-हराम के इजतेमाओं और सफ़रों से फ़ायदा उठाते हुए वह इन महीनों में अपनी मुफ़सिदाना कार्यवाईयों में और भी ज़्यादा तेज़ हो जाते थे और फिर

कमाल बे-हयाई से अपने दिल को झूठी तसल्ली देने के लिए वह इज़्ज़त के महीनों को अपनी जगह से इधर उधर मुंतक़िल भी कर दिया करते थे जिसे वह नसई के नाम से पुकारते थे और फिर आगे चल कर तो उन्होंने ग़ज़ब ही कर दिया कि सुलह हुदैबिया के ज़माना में बावजूद पुख़्ता अहदो पैमाँ के कुफ़्फ़ार--ए-मक्का और उन के साथियों ने हर्म के इलाक़ा में मुस्लमानों के एक हलीफ़ क़बीला के ख़िलाफ़ तलवार चलाई। फिर जब मुस्लमान इस क़बीला की हिमायत में निकले तो उन के ख़िलाफ़ भी हर्म में तलवार का प्रयोग किया। अतः इस जवाब से मुस्लमानों की तो तसल्ली होनी ही थी क़ुरैश भी कुछ ठंडे पड़ गए और इस दौरान में उन के आदमी भी अपने दो क़ैदियों को छुड़वाने के लिए मदीना पहुंच गए लेकिन चूँकि अभी तक साद बिन अबी वक़्क़ास और वापिस नहीं आए थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनके विषय मे सख़्त ख़दशा था कि यदि वे क़ुरैश के हाथ पड़ गए तो वे क़ुरैश उन्हें ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी वापसी तक क़ैदियों को छोड़ने से इंकार कर दिया और फ़रमाया कि मेरे आदमी बख़ैरियत मदीना पहुंच जाऐंगे तो फिर मैं तुम्हारे आदमियों को छोड़ दूँगा। इसलिए जब वे दोनों वापिस पहुंच तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़िद्या लेकर दोनों क़ैदियों को छोड़ दिया लेकिन इन क़ैदियों में से एक शख़्स पर मदीना के क़ियाम के दौरान में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़-ए-फाज़िला और इस्लामी तालीम की सदाक़त का इस क़दर गहरा असर हो चुका था कि उसने आज़ाद हो कर भी वापस जाने से इंकार कर दिया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर मुस्लमान हो कर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हल्क़ा-बगोशों में शामिल हो गया और अंततः बेअरे मऊना में शहीद हुआ। इस का नाम हकम बिन केस था।

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हो, पृष्ठ 330 से 334)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो की तलवार ग़ज़वा अहद के दिन टूट गई थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको अर्जून यानी खजूर की एक शाख़ मर्हमत फ़रमाई। अतः वे आप रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ में तलवार की तरह हो गई। उसी दिन से आप रज़ियल्लाहु अन्हो अर्जून के लक़ब से मशहूर हुए। (ओसोदुल गाबा फ़ी मारफ़तिल सहाबा भाग 3 पृष्ठ 196 अब्दुल्लाह बिन हजश,दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

अबू नईम कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश अपने रब की क़सम उठाने वाले और मुहब्बत-ए-इलाही को क़लब में जगह देने वाले और सबसे पहले इस्लामी झंडा क़ायम करने वाले थे।

(حلیۃ الاولیاء وطبقات الاصفیاء ،جلد 1، صفحہ 108، عَبْدُ اللهِ بْنِ جَحْشٍ،دار الفکر بیروت1996ء)

इमाम शोबी राहमहुल्लाह से रिवायत है कि मेरे पास बनी आमिर और बनी असद के दो आदमी आपस में फ़ख़र-ओ-मुबाहात का इज़हार करते हुए आए। बनी आमिर के शख़्स ने बनी असद के शख़्स का हाथ पकड़ रखा था। असदी कह रहा था कि मेरा हाथ छोड़ दो जबकि आमिरी कह रहा था कि ख़ुदा की क़सम! मैं आपको नहीं छोड़ूँगा तो इमाम शाबी कहते हैं कि मैं ने उसे कहा कि हे बनी आमिर के भाई इस को छोड़ दो और असदी से कहा कि तुम्हारी छः खूबियां ऐसी हैं जो पूरे अरब में किसी में नहीं हैं

वे ये हैं। नंबर एक कि तुम में से एक ख़ातून से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निकाह करना चाहा तो अल्लाह तआला ने करवा दिया और इन दोनों के दरमयान सफ़ीर हज़रत जिबराईल थे और वह ख़ातून हज़रत ज़ैनब बिंत हजश रज़ियल्लाहु अन्हा थीं और यह तुम्हारी क़ौम के लिए फ़ख़र की बात है। नंबर दो तुम में से एक शख़्स था जो कि जन्नती था मगर फिर भी ज़मीन पर आजिज़ी के साथ चलता था और वह हज़रत उकाशा बिन मोहसीन थे और ये तुम्हारी क़ौम के लिए फ़ख़र की बात है। नंबर तीन और

इस्लाम में सबसे पहला इल्म यानी झंडा जो दिया गया वह भी तुम में से एक शख़्स हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया गया और यह तुम्हारी क़ौम के लिए फ़ख़र की बात है। नंबर चार सबसे पहला माल-ए-ग़नीमत जो इस्लाम में तक़सीम हुआ वह अब्दुल्लाह बिन हजश का माल-ए-ग़नीमत है।

नंबर पाँच और बैअत-ए-रिज़वान में जिस शख़्स ने सबसे पहले बैअत की वह तुम्हारी क़ौम का था वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपना हाथ बढ़ाएं ताकि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बैअत करूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरयाफ़त फ़रमाया कि किस बात पर मेरी बैअत करोगे? उन्होंने उत्तर दिया कि जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल में है। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा मेरे दिल में क्या है? तो उन्होंने जवाब दिया फ़तह या शहादत। इसलिए आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम की हज़रत अबू सिनान रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैअत की। इसके बाद लोग आते और कहते कि हज़रत अबू सिनान रज़ियल्लाहु अन्हु वाली बैअत पर हम भी बैअत करते हैं और ये तुम्हारी क़ौम के लिए गर्व की बात है। नंबर छः : और जंग-ए-बदर के दिन सात मुहाजेरीन तुम्हारी क़ौम के थे और ये तुम्हारी क़ौम के लिए फ़ख़र की बात है। (حلیۃ الاولیاء وطبقات الاصفیاء, भाग 4, पृष्ठ 315-316

عامر بن شراحیل الشعبی,दारुल फ़िक़र बेरूत 1996 ई.)

फिर एक रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो जब अहद के दिन शहीद हुए तो हज़रत ज़ैनब बिंत ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अंहन आपके निकाह में थीं। उनकी शहादत के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब बिंत ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी कर ली। आप रज़ियल्लाहु अन्हो आठ माह तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाँ रहें और ये भी कहा जाता है कि दो तीन माह रहें और माह रबीउल आखिर के आख़िर में आप रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो का जनाज़ा पढ़ा और जन्नतुल बक़ी में दफ़न किया। (امتاع الاسماع, भाग 6 पृष्ठ 52 ام المؤمنین زینب بنت خزیمہ ज़ैनब बिंत ख़ुज़ैमा, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1999 ई.)

बाक़ी वर्णन जैसा कि मैंने कहा पहले हो चुका है

अगला वर्णन हज़रत सालेह शुक्रां रज़ियल्लाहु अन्हु का है। बाअज़ के नज़दीक हज़रत शुक्रां रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उम्मे यमन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने वालिद की तरफ़ से विरसा में मिले थे। **(الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، الجزء الثالث، صفحہ 284، "شقران" ء** दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत1995 ई.) ग़ुलाम थे। ग़ज़ व-ए-बदर के बाद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनको आज़ाद फ़र्मा दिया था। (ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़ तिल साहबा, भाग 2 पृष्ठ 636 शुक्रान दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद जिन अश्ख़ास को ग़ुसल देने की सआदत नसीब हुई उनमें हज़रत सालेह शुक्रान रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे तथा इनके इलावा आठ अहल-ए-बैत और थे।

(अल् तब्क़ातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 36-37 मुद्रित दारुल अहया तुर्रास अर्बिया 1996 ई.)

मस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल की रिवायत है कि हज़रत सालेह को एक सआदत और हासिल है। वही जो ग़ुसल के बारे में वर्णन हो चुका है कि आँहज़-रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब ग़ुसल दिया जा रहा था तो उस वक़्त जो अस्हाब पानी उंडेल रहे थे उनमें हज़रत सालेह शकरान रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उसामा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो थे। इसलिए रिवायत में आता है कि हज़रत इब्न-ए-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि जब लोग नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ग़ुसल देने के लिए इकट्ठे हुए तो घर में केवल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहल-ए-ख़ाना ही थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत फ़ज़ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो , हज़रत कुसुम बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उसामा बिन ज़ेद रज़ि-यल्लाहु अन्हो और हज़रत सालेह शकरान रज़ियल्लाहु अन्हो, आप सल्लल्ला-हो अलैहि व सल्लम के आज़ाद करदा ग़ुलाम। इसी दौरान घर के दरवाज़े पर खड़े बनू औफ़ बिन ख़ज़रज के हज़रत ओस बिन ख़ौला अंसारी जो बदर में

शामिल थे उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को पुकार कर कहा अली ! मैं आपको अल्लाह की क़सम देता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ हमारा हिस्सा भी रखना। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे फ़रमाया अंदर जाओ। इसलिए वह भी दाख़िल हो गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ग़ुसल देने के अवसर पर मौजूद थे परंतु उन्होंने ग़ुसल देने में शिरकत नहीं की। रावी कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने सीने से सहारा दिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़मीज़ आप पर ही थी और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो, फ़ज़ल और कुसम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ पहलू मुबारक बदल रहे थे और हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो और सालेह शकरान रज़ियल्लाहु अन्हो पानी डाल रहे थे और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ग़ुसल देने लगे। (मस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, भाग 1 पृष्ठ 682-683 हदीस नंबर 2357 आलेमुल कुतुब बेरूत लुबनान मुद्रित 1998 ई.)अल्लामा बलाज़री ने वर्णन किया है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत शकरान रज़ियल्लाहु अन्हो के साहबज़ादे अबदुर्ररहमान बिन शुक्रान को हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ रवाना किया और लिखा कि मैं तुम्हारी तरफ़ एक सालेह आदमी अबदुर्राहमान बिन सालेह शुक्रान, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज़ाद करदा ग़ुलाम थे, को भेज रहा हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाँ उनके वालिद के मुक़ाम का लिहाज़ रखते हुए उस से सलूक करना।

(الاصابة فی تمییز الصحابه، الجزء الخامس، صفحه 31، عبد الرحمان بن شقران, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1995 ई.)

एक रिवायत है कि अल्लामा बग़वी कहते हैं कि हज़रत शुक्रान रज़ियल्लाहु अन्हो ने मदीना में रिहायश इख़्तेयार की थी और आप रज़ियल्लाहु अन्हो का एक घर बस्रा में भी था। (الاصابة فی تمییز الصحابه، الجزء الخامس، صفحه 31، عبد الرحمان بن شقران पृष्ठ 285 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1995 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में आप रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात हुई

(الاصابة فی تمییز الصحابة ،الجزء الثالث، صفحه 285 "شقران" दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1999 ई.)

उनके ख़ानदान का आख़िरी फ़र्द हारून रशीद के अह्द में मदीना में फ़ौत हुआ। इसी तरह बस्रा में भी उनके ख़ानदान का एक शख़्स रहता था। मसअब कहते हैं कि उस की नसल आगे चली या नहीं उस का मुझे इल्म नहीं।

(ओसोदुल गाबा फ़ी मारफ़तिल सहाब, भाग 2 पृष्ठ 636 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

हज़रत सालेह शकरान रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक गधे पर सवार ख़ैबर की तरफ़ जाते हुए देखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इशारे से नमाज़ अदा फ़र्मा रहे थे। (मस्नद अहमद बिन हम्बल, भाग 5 पृष्ठ 505- 506 हदीस शकरान मौला रसूलुल्लाह, हदीस नंबर 16137 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई.) अर्थात सवारी पर बैठे हुए नमाज़ पढ़ रहे थे। यह भी एक मसला है कि सवारी पर नमाज़ अदा की जा सकती है कि नहीं

हज़रत मालिक बिन दुख़शम रज़ियल्लाहु अन्हो भी एक सहाबी हैं जिनके ज़िक्र का कुछ हिस्सा रहता है। उनके बारे में लिखा है कि हज़रत मालिक बिन दुख़शम का नाम मालिक बिन दुख़शम और इब्न-ए-दुख़शम भी वर्णन हुआ है।

(सही बुख़ारी, किताब अस्सलात, बाब मस्जिद फ़ील बैत, हदीस नंबर 425)

(مطالع الانوار علی صحاح الآثار, भाग 3 पृष्ठ 62 وزارة الاوقاف قطر ازمکتبة الشاملة 2012)

आप रज़ियल्लाहु अन्हो के वालिद का नाम दुख़शम बिन मरज़ख़ा था जबकि उनका नाम दुख़शम बिन मालिक बन दुख़शम बिन मरवान भी वर्णन हुआ है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो की वालिदा का नाम अमीरा बिंत साद था।(अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साद, भाग 3 पृष्ठ 414 मालिक बिन दख़शम, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 1990 ई.) (सीरत इब्ने हशशाम, भाग2 पृष्ठ 336 زیر عنوان من بنی دعد, दारुल कुतुब अर्बिया बेरूत लुबनान,1990 ई.)

हज़रत मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो की शादी जमीला बिंत उबै बिन सलूल से हुई जो राईसुल मुनाफ़ैकीन अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल की बहन थीं-।(ओसोदुल गाबा फ़ी मारेफतिल सहाबा ,भाग 7 पृष्ठ 52-53 जमीला बिंत अबी बिन सलूल,दारुल कुतुब इलमिया बेरूत लुबनान,1994 ई.)

सुहेल बिन अम्र को क़ैदी बनाने के अवसर पर हज़रत मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने ये अशआर कहे थे।

اَسَرْتُ سُهَيْلًا فَلَا اَبْتَغِیْ
اَسِيْرًا بِهٖ مِنْ جَمِيْعِ الْاُمَمْ
وَخِنْدَفُ تَعْلَمُ اَنَّ الْفَتٰی
فَتَاهَا سُهَيْلٌ اِذَا يُظْلَمْ
ضَرَبْتُ بِذِی الشَّفْرِ حَتّٰی انْثَنٰی
وَاَكْرَهْتُ نَفْسِیْ عَلٰی ذِی الْعَلَمْ

कि मैंने सुहेल को क़ैदी बनाया और इस के बदला में समस्त अक़्वाम से किसी को भी क़ैदी नहीं बनाना चाहता। बनू ख़िनदफ़ जानते हैं कि सुहेल ही अपने क़बीला का जवाँमर्द है जब उन पर ज़ुलम किया जाए। मैं ने झंडे वाले पर वार किया यहां तक कि वह झुक गया और मैंने कटे हुए होंट वाले से, मुराद सुहेल बिन अम्र से था, जंग करने पर अपने आपको मजबूर किया।

(سهیل بن عمرو وفداؤه، دار الکتاب العربی بیروت, दारुल कुतुब अर्बिया बेरूत 1990 ई.)

ग़ज़ व-ए-बदर के क़ैदियों के हवाले से ओसोदुल गाबा में एक रिवायत है कि अबू सालेह हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत करते हैं कि अबू युसर मालिक बिन दुखशम ओफ़ि और तारिक़ बिन उबैद अंसारी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि जो इस जंग में किसी को क़तल करेगा उसे उतना मिलेगा और जो किसी को क़ैद करेगा उसे उतना मिलेगा और हमने सत्तर लोगों को क़तल किया और सत्तर को क़ैद किया। इस पर हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम भी उन लोगों की तरह कर सकते थे मगर हमने सिर्फ इस वजह से नहीं किया क्योंकि हम मुस्लमानों की पीछे की तरफ़ से हिफ़ाज़त कर रहे थे। ग़नीमतें थोड़ी हैं और लोग बहुत हैं। अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन लोगों को इतना देंगे जिस क़दर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वादा किया है तो बाअज़ लोगों के हिस्सा में कुछ भी नहीं आएगा। अतः ये लोग बातें करते रहे कि इतने में अल्लाह तआला ने आयत नाज़िल फ़रमाई कि يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ (अन्फाल : 2) कि हे रसूल लोग तुझसे अम्वाल ग़नीमत के मुताल्लिक़ सवाल करते हैं। तो उनसे कह दे कि अम्वाल-ए-ग़नीमत अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हैं।

(ओसोदुल गाबा फ़ी मारेफतिल सहाबा, भाग 3 पृष्ठ 69-70 तारिक़ बिन उबैद, दारुल कुतुब बेरूत)

ग़ज़व-ए-अहद के दिन हज़रत मालिक बिन दुख़शम रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत ख़ारजा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास से गुज़रे। जबकि वह उस समय बैठे हुए थे। उनको तेराह के क़रीब भयानक ज़ख़म आए थे। हज़रत मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे कहा क्या आपको मालूम नहीं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद कर दिए गए हैं। हज़रत ख़ारिजह रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को शहीद कर दिया गया है तो यक़ीनन अल्लाह ज़िंदा है और वह नहीं मरेगा। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पैग़ाम पहुंचा दिया है। अतः अपने धर्म की खातिर लड़ो क्योंकि अल्लाह जीवित है वह कभी नहीं मरेगा।

(امتاع الاسماع جلد 1 صفحه 165، غزوه احد، زیر عنوان خبر خارجه بن زید)

एक दूसरी रिवायत में इस वाक़िया का वर्णन यूं मिलता है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शहीद होने की अफ़्वाह फैली तो हज़रत मालिक

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 16 february 2023 Issue No. 7

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

बिन दख़शम रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास से गुज़रे जबकि वह उस वक़्त बैठे हुए थे और उनके सीने पर तेराह भयानक ज़ख़म आए थे। हज़रत मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे कहा : क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद कर दिए गए हैं। हज़रत ख़ारिजह रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाब दिया अगर मुहम्मद सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं तो यक़ीनन अल्लाह ज़िंदा है और वह कभी नहीं मरेगा। यक़ीनन उन्हों ने पैग़ाम यानी इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा दिया है। अतः अपने दीन की ख़ातिर लड़ो। रावी कहते हैं कि फिर हज़रत मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत साद बिन रबी रज़ियल्लाहु अन्हो के पास से गुज़रे और उनको 12 भयानक ज़ख़म आए थे। हज़रत मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा। क्या तुम्हें मालूम है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाब दिया कि मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने रब के पैग़ाम को पहुंचा दिया है। अतः अपने दीन की ख़ातिर लड़ो क्योंकि अल्लाह ज़िंदा है वो कभी नहीं मरेगा।

(امتاع الاسماع جلد1 صفحہ165، غزوہ احد، زیر عنوان خبر خارجہ بن زید)

एक रिवायत में वर्णन है कि इन लोगों में से अक्सर ने रसूलुल्लाह सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि वह यानी हज़रत मालिक बन दख़शम रज़ियल्लाहु अन्हो मुनाफ़क़ीन की पनाह-गाह हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क्या वह नमाज़ नहीं पढ़ता? तुम कहते हो मुनाफ़िक़ है तो वह नमाज़ नहीं पढ़ता? लोगों ने अर्ज़ किया जी। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ तो पढ़ता है मगर वह ऐसी नमाज़ है जिसमें कोई ख़ैर नहीं है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो मर्तबा फ़रमाया मुझे नमाज़ पढ़ने वालों के क़तल से मना किया गया है।

(المعجم الکبیر للطبرانی باب العین، ما اسند عتبان بن مالك، روایت نمبر 44، جزء 18، صفحہ 26، مکتبہ ابن تیمیہ قاھرہ)

इब्ने तीमीह क़ाहिरा

यह आजकल के मुस्लमानों के लिए भी सबक़ है

एक रिवायत के मुताबिक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मालिक बिन दुख़शम के साथ हज़रत मअन बिन आदी रज़ियल्लाहु अन्हो के भाई हज़रत आसिम बिन आदी रज़ियल्लाहु अन्हो को मस्जिद ज़रार के मुनह-दिम करने के लिए रवाना फ़रमाया था।

(المنتظم فی تاریخ الملوك والامم از علامہ جوزی، جلد 5، صفحہ 216، عاصم بن عدی، دار الکتب العلمیۃ بیروت، لبنا-)

हज़रत मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में आता है कि उनकी नसल नहीं चली।

(अल् तब्क़ातुल कुबरा ले इब्ने साद, भाग 3 पृष्ठ 415 मालिक बिन दख़शम, दारुल कुतुब बेरूत लुबनान, 1990 ई.)

फिर हज़रत उकाशह बिन महसिन रज़ियल्लाहु अन्हो का कुछ थोड़ा सा ज़िक्र है। उनका नाम उकाशा था। मोहसिन बिन हरसान वलदीयत थी। अबू मोहसिन उनकी कुनिय्यत थी। हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में 12 हिज्री में उनकी शहादत हुई।

(ओसोदुल गाबा फ़ी मारेफतिल सहाबा, भाग 4 पृष्ठ 64-65 उकाशा बिन मोहसिन, दारुल कुतुब इलमिया बेरूत)

इमाम शाबी ने उकाशा की तारीफ़ इन अलफ़ाज़ में की है कि एक शख़्स था जो कि जन्नती था मगर फिर भी ज़मीन पर आजिज़ी के साथ चलता था और वह उकाशा बिन मोहसिन थे।

(حلیۃ الاولیاء وطبقات الاصفیاء، جلد 4، صفحہ 316-315، عامر بن شراحیل الشعبی، دار الفکر بیروت 1996ء)

दो हिज्री में ग़ज़व-ए-बदर के फ़ौरन बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ियल्लाहु अन्हो को एक मुहिम पर रवाना फ़रमाया। इस सरिया में हज़रत उकाशा बिन मोहसिन रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल थे।

(السیرۃ الحلبیۃ، جز 3، صفحہ 219، سریہ حضرت عبد اللہ بن جحش، دار الکتب العلمیۃ بیروت 2002ء)

सीरतुल हल्बिया में है कि ग़ज़ व-ए-अहद के अवसर पर आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम नियमित अपने कमान से तीर-अंदाज़ी फ़रमाते रहे जिसका नाम कतूम था क्योंकि इस से तीर-अंदाज़ी के वक़्त कोई आवाज़ नहीं पैदा होती थी। आख़िर नियमित तीर-अंदाज़ी की वजह से इस कमान का एक हिस्सा टूट गया। एक रिवायत में यूं है कि यहां तक कि आपकी इस कमान का एक सिरा टूट गया जिसमें तांत बाँधी जाती है। उद्देश्य नियमित तीर चलाने से वह कमान टूट गई। आपके हाथ में कमान की बालिशत भर डोरी बाक़ी रह गई। हज़रत उकाशा बिन मोहसिन रज़ियल्लाहु अन्हो ने कमान की डोरी बाँधने के लिए वह आपसे ली परंतु वह डोर छोटी पड़ गई और उन्होंने आप सल्लल्ला-हो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम यह डोर छोटी पड़ गई है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया इसे खींचो पूरी हो जाएगी। हज़रत उकाशा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि उस ज़ात की क़सम जिसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हक़ देकर भेजा है मैं ने डोर खींची तो वह खिंच कर इतनी लंबी हो गई कि मैंने इस से कमान के सिर पर दो तीन बल भी दिए और इतमेनान से इस को बांध दिया।

(السیرۃ الحلبیۃ، جز 2، صفحہ 311 " غزوہ اُحد" دار الکتب العلمیۃ بیروت 2002ء)

एक रिवायत है कि छः हिज्री में उयैना बिन हिस्न् ने ग़त्फ़ान के घुड़सवारों के साथ गाबह में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूध देने वाली ऊंटनियों पर हमला किया।

यहां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऊंट चरा करते थे। चरागाह थी। ग़ाबा में बनू गतफ़ान का एक मर्द और एक औरत भी रहते थे। दुश्मनों ने हमला करके मर्द को क़तल कर दिया और औरत को ऊंटनियों के साथ ले गए। इस वाक़िया से सबसे पहले बाख़बर होने वाले हज़रत सलमा बिन अक्वा। वह सुबह के वक़्त ग़ाबा के लिए निकले और उनके साथ हज़रत तलहा बिन ऊबेदु-ल्लाह का ग़ुलाम और इस के साथ घोड़ा था। जब वे सानीयतुल विदा मुक़ाम पर चढ़े तो उन्होंने हमला आवरों के बाअज़ घोड़े देखे तोसल् पहाड़ की एक जानिब से ऊपर चढ़े और पीछे अपने लोगों को मदद के लिए पुकारा। फिर हमला--आवर जमात के तआक़ुब में ये शिकारी जानवर की मानिंद तेज़ी से निकले यहां तक कि इन लोगों को जा लिया और उन पर तीर बरसाने शुरू कर दिए। जब भी घुड़सवार उन की तरफ़ मुतवज्जा होते तो हज़रत सलमा भाग जाते और वापस लौटते और जब अवसर मिलता तो वे तीर बरसाते। जब इस वाक़िया की ख़बर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुंची तो सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी मदीना में ऐलान किया कि ख़तरा है। घुड़सवार रसूलु-ल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आने लगे। इन घुड़सवारों में हज़रत उकाशा बिन मोहसिन रज़ियल्लाहु अन्हो और दीगर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो शामिल थे। इस मार्का में हज़रत उकाशा बिन मोहसिन रज़ियल्लाहु अन्हो ने औ और उसके बेटे अम्र बिन औबार को जा लिया। वे दोनों एक ऊंट पर सवार थे। हज़रत उकाशा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको एक नेज़े में ही पिरो दिया और दोनों को क़तल कर दिया और छीनी हुई बाअज़ ऊंटनियां वापिस ले आए।

(سیر أعلام النبلاء، جزء 2، صفحہ 5تا7، غزوہ ذی قرد مؤسسۃ الرسالۃ بیروت 1996ء)

शेष आगे

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad